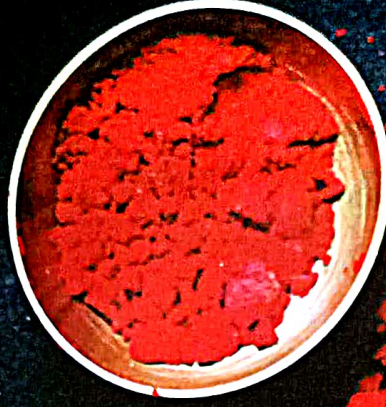


महाविद्यालयीन पत्रिका

# लक्ष्य



**नवीन शासकीय महाविद्यालय, सक्ती**  
बिलासपुर (छ.ग.)

## महाविद्यालयीन गतिविधियां



# लाक्ष्म्या

महाविद्यालयीन पत्रिका

2024-25

डॉ. (श्रीमती) रुबी मिहोत्रा  
प्रचार्य एवं संरक्षक

डॉ. फूलदास महंत  
प्रधान संपादक

डॉ. व्ही.सी.शुक्ला  
संपादक

श्रीमती चित्ररेखा श्रीवास  
सह संपादक  
श्री आकाश कुमार पटेल  
सह संपादक

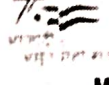
संपादक मण्डल  
डॉ. अजय सिंह, डॉ. रवेता जायसवाल, श्रीमती मनीषा उके, श्रीमती डॉ. सरिता पटेल,  
बरखा हलवाई, अफिरा श्रीवास, इर्षा देवानी, संजय कुर्ने, सोनिय शर्मा, अरिता राजकुमारी सिन्हा



:: प्रकाशक ::

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी  
बिलासपुर (छ.ग.)

तोखन साहू  
TOKHAN SAHU



आवासन और शहरी कार्य राज्य मंत्री  
भारत सरकार  
Minister of State for Housing & Urban Affairs  
Government of India

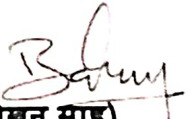


सुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपकी संस्था द्वारा "लक्ष्य पत्रिका" का द्वितीय अंक प्रकाशित किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का दर्पण है, बल्कि समाज में जागरूकता एवं सकारात्मक मोच के प्रसार का भी सशक्त माध्यम है।

इस अवसर पर मैं संपादकीय टीम, सभी पदाधिकारियों एवं पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ। मुझे विश्वास है कि लक्ष्य पत्रिका का यह अंक समाज को नई दिशा देगा और रचनात्मकता एवं सांस्कृतिक मूल्यों को और सुदृढ़ करेगा।

आपके उज्वल भविष्य और संस्था की निरंतर प्रगति हेतु मेरी ओर से मंगलकामनाएँ।

  
(तोखन साहू)

नवीन शासकीय महाविद्यालय  
सकरी, जिला- विलासपुर,  
छत्तीसगढ़.

उररुणु सारत  
उर गुणुतरीशु  
ARUN SAO  
Deputy Chief Minister



उरतीरगुणु शररत  
नरतु कुररतु, सरतु कुररतु उरतीरु  
कुररतु शररतु कुररतु, नरतीरु कुररतु उर कुररतु कुररतु  
Government of Chhattisgarh  
Public Works Department, Public Health Engineering  
Law & Legislative Affairs Department  
Urban Administration & Development Department

डुररुतु 2806/नर गुणुतरीशु/2015

डुररुतु, कुररतु: 22/08/2015

—: शुडुकुररतुनरु सनुदुशु —:



डुशुे डरु कुररतुकर अरुतुतु डुरसनुनतरु डुरई डुरे कुरर, नरुवनु शररसुकीडु डुररुवरुवुररतुडु सुरुकुरी,  
कुररतु-कुररतुसरुडुर (ख.डु.) डुरररु डुररुशुतु डुररुतुररुकरु "लरुशुडु" के डुररुतुडु अंक कुरर डुररकुररन कुरररु  
कुरर ररुडुर डुरे ।

डुशुे आशरु डुरी नरुडुरी डुरलरुकुर सडुडुडुडु वरुशुडुडु डुरे कुरर, डुरसु खुडुररतुनरुडु सुरुशुडुन के डुरररु  
डुररकुरररतु डुररुशुतु डुररुतुररुकरु "लरुशुडु" के डुररुतुडु अंक डुरे सरुडुडु कुरर व ररुडुनरुतुसुकु अडुडीरुडु कुरे डुरररु  
कुरर डुरे ।

"लरुशुडु" के डुररुतुडु अंक डुररुतुररुकरु डुररकुरररन के लरुडु डुरेरी आरु से डुररुडुररु कुरर डुररुडुरे डुरवु अरुसीडु  
शुडुकुररतुनरुडु.....

(अरुकुरणु सरुडु)

डुररुडुररुतु सनुदुशु  
डुररुडुडुडु - सुरुडुररुडुर  
डुररुडुनरुडुनरु डुरेडु डुर. 28



डुररुडुडुडु डुररुडुडुडु डुररुडुडु,  
डुररुडुडु डुररु, 27 डुरीडुडी,  
डुररुडुडुडु, डुररुडुडुडु  
डुररुडुडुडु 94266 30734  
डुररुडुडुडु@chhattisgarh.nic.in @ Gmail.com

डुररु डुररुडुडुडु डुररुडुडुडु...28...

डुररुडुडुडुडु: 021/021/2.02.5..

—: शुडुकुररतुनरु सनुदुशु —:



डुशुे डरु कुररतुकर अरुतुतु डुरसनुनतरु डुरे ररुडु डुरे कुरर नरुवनु शररसुकीडु डुररुवरुवुररतुडु सुरुकुरी,  
कुररतु-कुररतुसरुडुर (ख.डु.) के डुरररु शरुशुडुणु सुरुन 2025-26 डुरे "लरुशुडु" डुररुतुररुकरु के डुररुतुडु अंक कुरर  
डुररकुरररन कुरररुने कुरर ररुडु डुरे । डुररुवरुवुररतुडु के डुररु डुररुडु/खरुनरुडु अरुडुने शुरुशुडुडुडु वरुकुररस के  
सरुडु-सरुडु अरुडुडुडी कुररतुतुसुकु डुररु ररुडुनरुतुसुकु डुररुतुररुडु कुरे डुररुतुररुकरु के डुररुडुडुडु से सरुडुडुने लरु सरुकेडु डुरे  
आरुने डुररुने डुरीडुडी कुरर डुररु डुररुडुररुन कुरर डुरे । डुररुवरुवुररतुडु के खरुनरुडु/खरुनरुडु शरुशुडुणु के सरुडु-सरुडु  
ररुडुनरुतुसुकु शरुकुररतु के डुररुडुडुडु से आरुने डुररुलकुररु डुररुवुररुतुलु वरुकुररस, सरुडुडुडु वरुकुररस व डुरेडु सरुडु  
लरुडु तरुडुर ररुडुडुने ।

डुशुे आशरु डुरे कुरर "लरुशुडु" डुररुतुररुकरु डुररुवरुवुररतुडु डुरे नरुडु सरुडु डुररु उडुडु डुररुडुने के सरुडु-सरुडु  
डुररुडुडुडु डुररु सरुडुनरुतुसुकु डुररु डुरेने डुरे सरुडुल डुरेडी । डुरे "लरुशुडु" डुररुतुररुकरु कुरी डुररुतुडु अंक के  
सरुडुलतरुडुररुडु डुररुकुरररन डुरे लु शुडुकुररतुनरुडु डुरेडुररुतु कुररतरु डुरे ।

"डुररुडुररु कुरर शुडुकुररतुनरुडुडु सनुदुशु"

डुररुडुडुडु  
(डुरी. डुररुडुडुडुडु सनुदुशु)

डॉ. एस. भारतीशारन, भा.उ.से

सचिव,  
Dr. S. Bharatidasan, IAS  
Secretary



अंशसंख्या पत्र क्र. / 201  
नाम लक्ष्म अग्रवाल, पिनकोड 492002  
उत्तरीमार्ग शारन  
कौशल विकास, स्वयंसेवी शिक्षा,  
सामाजिक एवं तंत्र शिक्षा विभाग  
Government of Chhattisgarh  
Skill Development, Technical Education,  
Employment, and Higher Education  
Department

—: शुभकामना संदेश :-



मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि नवीन शासकीय महाविद्यालय सकरी, जिला-विलासपुर (छ.ग.) द्वारा पत्रिका "लक्ष्य" के द्वितीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि उनके सर्वांगीण विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

मैं इस प्रयास की सराहना करते हुए महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ। आशा है कि यह पत्रिका शिक्षा, संस्कृति और नवाचार के क्षेत्र में विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

पत्रिका के सफलतम प्रकाशन हेतु मेरे हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ. एस. भारतीशारन)

पत्र क्र. 2/24, अक्षय, महानदी नगर लक्ष्म अग्रवाल, पिनकोड - शारन, जिला - शारन, उत्तरमार्ग, 492002  
फोन - 91-0771-2231120, 2510349, ई-मेल - bsp@bhpvc.org, drsai@rediffmail.com

संजय अग्रवाल  
(भा.उ.से)

प्रोफेसर एवं जिला दूरशैक्षणिकी



दूरभाष : (07752) 223344 (कार्यालय)  
223322 (निवास)  
फोन नंबर : (07752) 223332 (कार्यालय)  
वेब साइट : www.bhilsapur.gov.in  
ई-मेल : collector-bhp.cg@nic.in  
कार्यालय, कलेक्टर, विलासपुर (छ.ग.)  
अक्षय नगर, पिनकोड - 492002  
दिनांक : 19/12/2025

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि नवीन शासकीय महाविद्यालय सकरी जिला विलासपुर अपने महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका " लक्ष्य " का द्वितीय अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। उक्त पत्रिका में साहित्यिक, सांस्कृतिक, मौखिक व शोधपरक लेख, अनुभव, रचनात्मक अभिव्यक्ति (कविता / कहानी), उपलब्धियों व विभागीय प्रतिवेदन शामिल किया जावेगा।

पत्र पत्रिकाएं विद्यार्थियों को कलात्मक, रचनात्मक एवं सृजनात्मक गतिविधियों को बढ़ाने में सहायक तो होती है साथ ही उनमें स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना जगाकर अनुसंधान हेतु प्रेरित करती है। मुझे विश्वास है कि महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व विकास को और अधिक प्रखर बनाने में उक्त पत्रिका अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं पत्रिका के सफलतम प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

प्रति,

प्रभाव,  
नवीन शासकीय महाविद्यालय सकरी,  
जिला विलासपुर।

(संजय अग्रवाल)

आचार्य ए.डी.एन. वाजापेयी  
मुख्यालय



फ़ोन : (+91) 7753-296380  
मोबाइल : (+91) 9816679999  
ई-मेल : vc@bhabsociety.ac.in, www.bhabsociety.ac.in  
वेबसाइट : bhabsociety.ac.in, www.bhabsociety.ac.in  
अदालत बिल्डिंग, बिलासपुर (छ.ग.) 495009

क्रमांक/ 380/नि.स./2025

बिलासपुर, दिनांक 28.02.2025



संदेश

मौलाना ए जान के अखंड स्मृती होइत है कि नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी जिला-बिलासपुर के बरस भर के सब्बो जतिविधि पत्रिका 'लक्ष्य' के माध्यम से प्रकाशित होवत है।

पत्रिका महाविद्यालय के जन्मो जतिविधि के आह्वान होवे। पत्रिका के प्रकाशन के विद्यार्थी मन में रचनात्मक, सृजनात्मक प्रतिभा ल उभारे के ससतत माध्यम होवे।

विद्यार्थी जीवन न कुशलता, उत्साह, नवाचार, स्फूर्ति अऊ विचार के अभिव्यक्ति के बहुत महत्वपूर्ण होवे। विद्यार्थी ल अपन लक्ष्य ल प्राप्त करे बर सदैव सजग एवं कर्मांड होना चाही। ए साल जन्मो विद्यार्थी मन अपन उद्देश्य ल प्राप्त करे न सकल होवत।

भैं के पत्रिका 'लक्ष्य' के सतपादक, लेखक मन के साथ न महाविद्यालय के परधान आचार्य ल अउ जन्मो गुल्जारी मन ला अखंड अकन बाधुई देवत हौं अउ उखर उखर भविष्य के कामना करत हौं।

(अच्छा दिवाकर नाथ वाजापेयी)

रजनेश सिंह

गापुरे,  
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक



कार्यालय वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक  
जिला-बिलासपुर (छ.ग.) 495 001  
फोन : 07752-223330 (अदालत)  
: 07752-223333 (बिलासपुर)  
फैसला : 07752-250202  
मोबाइल : 94791-93001  
ई-मेल : sp-bhabsociety.cg@gov.in

बिलासपुर, दिनांक 20/08/2025

अ.शा.पत्र क्र./ST-1/342

-: शुभकामना संदेश :-



यह जानकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई कि नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी, जिला-बिलासपुर (छत्तीसगढ़) द्वारा शैक्षणिक सत्र 2024-25 हेतु महाविद्यालय पत्रिका 'लक्ष्य' का द्वितीय अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

ज्ञानार्जन के साथ रचनात्मकता और अभिव्यक्ति का अवसर किसी भी छात्र-छात्रा के व्यक्तित्व को परिमार्जित करता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों के भीतर छिपी सृजनात्मकता एवं अभिव्यक्ति को उजागर करने का माध्यम बनेगी। साहित्य, संस्कृति और सामाजिक सरोकारों से परिपूर्ण यह पत्रिका 'लक्ष्य' निश्चित रूप से उन्हें संवेदनशील, जिम्मेदार और दूरदर्शी नागरिक बनने हेतु प्रेरित करेगी।

भैं महाविद्यालय परिवार के इस प्रयास की सराहना करता हूँ और कामना करता हूँ कि यह पत्रिका सदैव महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य का पथ-प्रदर्शक बने।

(रजनेश सिंह, गापुरे)  
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक,  
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

भारतीय जनता पार्टी  
जिला-बिलासपुर, विधानसभा तखतपुर



रवि मेहर  
मण्डल अध्यक्ष सकरी

// शुभकामना संदेश //



मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि नवीन शासकीय महाविद्यालय सकरी, जिला-बिलासपुर द्वारा महाविद्यालय की पत्रिका लक्ष्य, शिक्षण सत्र 2024-25 के लिए प्रकाशित की जा रही है। महाविद्यालय के युवा छात्र/छात्राएं अपने अध्ययन के अतिरिक्त बहुत सी प्रतिभा को छिपाए रहते हैं, उन्हें इस ओर अवसर ही नहीं मिल पाता। मेरी ऐसी धारणा है कि नवीन शासकीय महाविद्यालय सकरी के छात्र/छात्राएं जिनमें लगभग 80 से 90 प्रतिशत हमारी युवा बहनें शिक्षा के प्रति आगे आए हैं उन्हें और युवा भाइयों को भी अपनी रचनात्मक प्रतिभा को आगे लाने का अवसर "लक्ष्य" पत्रिका के माध्यम से मिलेगा। मेरी इच्छा है कि रचनात्मकता से जुड़े युवा छोटी-छोटी रचना लिखने का प्रयास जरूर करें, ताकि उनकी पत्रकारिता के क्षेत्र में भी सुंदर अवसर मिल सके।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

  
रवि मेहर  
अध्यक्ष

जनभागीदारी समिति  
नवीन शासकीय महाविद्यालय सकरी  
जिला बिलासपुर छत्तीसगढ़

## प्राचार्य की कलम से

महाविद्यालय अपने स्थापना के 5वें वर्ष में प्रवेश करने जा रहा है। इस महाविद्यालय की स्थापना स्थानीय वरिष्ठ नागरिकों, प्रतिनिधियों के लगातार प्रयास से, नागरिकों के जायज माँग के आधार पर छत्तीसगढ़ शासन शिक्षा विभाग मंत्रालय महानदी भवन, नया रायपुर अटल नगर का पत्र क्रमांक/350/2019/38-1 दिनांक 09.07.2021 एवं कार्यालय आयुक्त उच्च शिक्षा संचालनालय की प्रशासकीय अनुमति पत्र क्र. 57/20 आ.उ.शि./योजना 2020-21 अटल नगर दिनांक 06.08.2021 द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के युवा छात्र/छात्राओं के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रारंभ की गई।

शिक्षक सत्र 2025-25 के प्रारंभ में ही महाविद्यालय की लक्ष्य पत्रिका का प्रकाशन हर्ष का विषय है। वर्तमान में नवीन शासकीय महाविद्यालय सकरी पुराने शासकीय कन्या हाई स्कूल सकरी में संचालित है। वर्तमान में यह नगर निगम बिलासपुर वार्ड क्रमांक 02 में स्थित है। महाविद्यालय का नया भवन हेतु भूमि न्यायालय कलेक्टर (शु.प्रबंध शाखा) जिला बिलासपुर छ.ग. के आदेश क्रमांक 3380 दिनांक 09.09.2024 के अनुसार सकरी स्थित 05 एकड़ भूमि नवीन शासकीय महाविद्यालय सकरी के निर्माण हेतु नि.शुल्क आवंटित हो चुकी है। भवन निर्माण हेतु शांति चार करोड़ पैंसठ लाख रुपये आवंटित हो चुकी है शीघ्र ही भवन निर्माण शुरू होगा, यह हर्ष का विषय है।

इस महाविद्यालय के नजदीक 15 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी इस महाविद्यालय में प्रवेश लेकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ग्रामीण अंचल के अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़े वर्ग एवं सामान्य वर्ग के छात्र/छात्राएँ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में योजनाबद्ध शिक्षा की ओर बढ़ें, उन्हें शासन से समुचित संसाधन प्राप्त हों इस दिशा में महाविद्यालय प्रशासन सतत प्रयासरत है।

शिक्षण 2024-25 में इस महाविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू हो चुका है, इस वर्ष शिक्षण सत्र 2025-26 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अध्येयनरत छात्र/छात्राएँ तृतीय सेमेस्टर में प्रवेश ले रहे हैं यह बड़ी उपलब्धि है, बलात् हो कि इस महाविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत अध्येयनरत छात्र/छात्राओं का विगत सेमेस्टर में परीक्षा परिणाम लगभग शत प्रतिशत रहा है। इस महाविद्यालय में कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय जिसमें नणित एवं बायो. दोनों ग्रुप है, शासन के द्वारा स्वीकृत पत्र के अनुरूप सभी विषय में नियमित सहायक प्राध्यापक कार्यरत है। इसका प्रतिकर परीक्षा पर भी सकारात्मक पड़ रहा है।

राष्ट्रीय सेवा योजना, खेल स्पर्धा, विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम के अतिरिक्त रेड क्रॉस एवं वार्षिक कैंनेपडर के अनुसार महाविद्यालय में नतिविधियाँ संचालित होती रहती हैं। महाविद्यालय में वृक्षरोपण का विशेष महत्त्व दिया गया है। यह पर्यावरण संतुलन के लिए अत्यावश्यक है, महाविद्यालय में मतदाता जागरूकता प्रोग्राम के तहत मतदान करने हेतु प्रेरित भी किया जाता है।

नवीन शासकीय महाविद्यालय सभी अपनी स्थापना काल से लेकर आज तक अपने लक्ष्य एवं उद्देश्य के शूनै:शूनै: प्राप्त करने में सफल हो रहा है।

पत्रिका में सफल प्रकाशन के साथ युवा/छात्र/छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित मेरी हार्दिक बधाई।

डॉ. (श्रीमती) स्वामी मिन्होया  
प्राचार्य



## संपादकीय

महाविद्यालयीन पत्रिका "लक्ष्य" आपके हाथों में सौंपते हुए हर्ष हो रहा है। हमारी शिक्षा प्रणाली में बदलाव होने से शिक्षण सत्र 2025-26 में पुरानी पद्धति एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जो कि उत्तीरगढ़ के महाविद्यालयों में शिक्षण सत्र 2024-25 से लागू हो चुकी है, वे जो ही पद्धति से शिक्षण कार्य हो रही है, यह विद्यार्थियों के लिये इस मायने में लाभदायक है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति अब विद्यार्थियों को उनकी रूचि के



अनुसार रोजगोरेनुभूती शिक्षा की ओर अभिप्रित कचेगी। सेमेस्टर पद्धती परीक्षा होने से ईकाई टेस्ट परीक्षा, आन्तरिक टेस्ट परीक्षा, प्रोजेक्ट वर्क जैसे नई चीजों को आज का युवा अच्छे से सीख रहा है, कम्प्युटर, प्रोजेक्टर तथा मोबाईल का अच्छे से उपयोग कर विद्यार्थी गुनल/नेट/इंटरनेट से जुडकर नई नई जानकारीयों से लाभान्वित हो रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का "लक्ष्य" यह है कि अब विज्ञान का विद्यार्थी वाणिज्य तथा कला का विद्यार्थी विज्ञान इसी तरह वाणिज्य का विद्यार्थी विज्ञान और कला की पढ़ाई भी कर सकता है। खास बात यह है कि आज की शिक्षा प्रणाली समावेशी शिक्षा पद्धति हो गई है, जो कि अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति की विशेषता को एक सूर में बाँधने के लक्ष्य की ओर इनिगत करती है। विगत सेमेस्टर परीक्षा में महाविद्यालय में सभी विषय के टीचिंग स्टंप होने से हमारे महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा है। इस महाविद्यालय में छात्रों की अपेक्षा छात्राएँ 90 प्रतिशत प्रवेश लेती हैं। जो कि "नारी शिक्षा" की प्राथमिकता को सिद्ध करता है। यह गांव, शहर और देश को नारियों के द्वारा आगे ले जाने की ओर सीधा-सीधा इशारा है।

उभी हाल में हमने देखा "ऑपरेशन सिद्ध" ने किस तरह अपना करतब दिव्यकर भारत देश का शान बरखा है।

महाविद्यालयीन पत्रिका का नामकरण भी इसी उद्देश्य की प्राप्ति से "लक्ष्य" रखा गया है हम अपने उन्निषद में कही गई श्लोक "यत् भवन्तु युस्मिन्, सर्वे सन्तु निरामया" के अनुसार सभी के सुख, शान्ति, मंगलमय की कामना करते हैं। सभी अपने अपने लक्ष्यों को प्राप्त करें। कोई अब भूखा न रहे, अपने रूचि के अनुकूल कर्म करें और अपने "लक्ष्य" को प्राप्त करें, यही राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य भी है।

विद्यार्थी शैक्षणिक गतिविधियों के अतिरिक्त अपनी रचनात्मक प्रतिभा द्वारा साहित्यिक कविता, कहानी, निबंध लेखन, ज्ञान की बातें, सूचितियों, ज्ञान वर्क कोई उपदेश को लक्ष्य पत्रिका के माध्यम से अपनी मौलिक रचना को इस पत्रिका में प्रकाशित कराएँ, उन सभी को बधाई के साथ पत्रिका प्रकाशन में निजका भी सहयोग प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मिलता रहा, उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

डॉ. पूलदास महंत  
प्रधान संपादक

## अनुक्रमिका

स.क्र.	शीर्षक	लेखक / शिल्पिका	पृष्ठ क्रमांक
1	जीवन के सवाल और गणित	बरखा हलवाई	1
2	भारतीय किसान की सपुद्धि हेतु विज्ञान की नई थेंद	डॉ. श्वेता जायसवाल	2
3	Mental Health Matters : Dealing with Stress, Anxiety and Burnout	Ankita Shrivastava	5
4	विद्यार्थी के आदने में रायदा - डॉ. पूलदास महंत	-	6
5	ऐसी क्या खासियत है, छत्तीसगढ़ के निवासियों में - आदये जानते हैं	डॉ. पूलदास महंत	11
6	छत्तीसगढ़ी के शब्दों को जानना हमारे लिये क्यों जरुरी ?	डॉ. श्वेता जायसवाल	13
7	किसान, शिल्पिक और नारी	डॉ. पूलदास महंत	15
8	पर्यावरण के साथ बंधा है जीवन का डोर	विजयेखा श्रीवास्त	19
9	भारत में कृषि पद्धत संभारना एवं युनैती	अरुण कुमार पाटिल	20
10	Finding your passion : Pursuing your dreams with purpose	Akash Kumar Patel	22
11	स्वास्थ्य	अजय सिंह	23
12	छत्तीसगढ़ी के चरलरिया (संकलित)	अयुष सुंदरशी	23
13	परार्थ से ब्रह्मण्ड को समझना	कृष्ण कुमार	24
14	सावन सोमार की शिवभक्ति की कहानी	सीता केंद	24
15	न्यू शिक्षा नीति	राखी वस्त्रकार	27
16	आखिरी गुलाकात (बड़े भैया)	श्वेता खाड़े	31
17	बीजों से प्यार	लोकेश कुमार सुंदरशी	33
18	शैल से ताम तथा हानि	नीलम वस्त्रकार	33
19	जीवन का लक्ष्य	अभिषा सुंदरशी	34
20	जिन्दागी पुरकुराने लगी	अभिषा सुंदरशी	35
21	मेरी माँ	हिमांशी कौशिक	36
22	देरली	छाया बांधेकर	36
23	इन्द्रधनुष में काला रंग क्यों नहीं होता	प्रिया यादव	37
24	बहाने विरुद्ध सफलता	प्रिया यादव	38

25	मेरे पापा	सुरेश यादव	39
26	Reel(रेल) नाम और हॉलि के बारे में कुछ बातें	ममता मिश्रा	40
27	हर्टल कर्टल मोबाइल	निकिता सूर्यवंशी	40
28	साल जीवन उच्च विचार	मोनिका पात्रे	41
29	मोबाईल क्या है ? राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मोबाइल का उपयोग कैसे करें ?	रितिका	43
30	धलीसात्री की प्रकृति भी रंगा है होली के रंग में	-	45
31	कब आही सोनल बिलन	प्रकाश कुमार कौशिक	45
32	मन के हार है, मन के जीते जीत	स्नेहा साहू	46
33	नारी सशक्तिकरण	प्रति गुला	48
34	भूतिका स्मार्ट फोन	संजीता दंजारे	50
35	चयशंकर जी की कहला (कामयाबी)	सुरश्र गुला	50
36	प्रतियोगिता की होड में हम कैसे रहें	देविका कौशिक	51
37	देवता बनके आर गांधी	कु. श्रद्धा साहू	52
38	महान साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल को भिला ज्ञानपीठ पुरस्कार	सुशी पटवा	53
39	धलीसात्रिया कहलवत	संजय दत्त बघेल	54
40	धलीसाहू दंजना	प्रदीप साहू	54



## अरा दीपो अव



महाविद्यालयीय वार्षिक पत्रिका

## जीवन के सवाल और गणित

वरखा हलवाई  
सहायक प्राध्यापक - गणित

गणित के सवाल और जीवन के सवालों के बीच गहरा संबंध है। गणित हमें तर्क, समस्या का समाधान और आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद करता है, जो जीवन के सवालों के लिए भी महत्वपूर्ण है। गणित के माध्यम से हम न केवल समस्याओं और मात्राओं के बीच संबंध को समझते हैं, अपितु हम जीवन के विभिन्न पहलुओं को अधिक समझदारी से देखने की क्षमता विकसित करते हैं।

गणित में हमें किसी समस्या का समाधान ढूँढ़ने के लिए तर्क व रणनीति की आवश्यकता होती है। किसी सवाल को हल करने की कई विधियाँ हो सकती हैं। इसी प्रकार जीवन की समस्याओं को हल करने की भी कई विधियाँ होती हैं। आवश्यकता सिर्फ यह है कि हम धैर्य के साथ उस विधि को तलाश कर सकें जो कारगर हो और यह केवल तभी संभव है जब हम एकाग्रचित्त होकर उस समस्या और समस्या को हल करने की विधियों का चिंतन करें। यही नहीं गणित में किसी समस्या को हल करने के लिए यह भी आवश्यक होता है कि हम इस बात की पुष्टि करें कि दिए गए सवाल में हमारे पास क्या उपलब्ध है तथा जिस विधि का प्रयोग किया जाना है उसके लिए आवश्यक चीजें क्या हैं? ठीक उसी प्रकार जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए उपलब्ध साधन की पुष्टि करना आवश्यक है। हमारे पास उपलब्ध संसाधनों, विधियों की उपलब्धता व समस्या की समझ होने के बाद भी हम कई बार गणित के सवालों को हल करने में असफल हो जाते हैं। तब आवश्यकता यह होती है कि हम सवाल के हल का एक बार पुनः अवलोकन करें तथा गलतियों को खोजकर उसमें आवश्यक सुधार की कोशिश करें न कि हार मानें। इसी प्रकार जीवन में भी कई समस्याओं का समाधान पाने में सफल नहीं हो पाते और तब आवश्यकता होती है गलतियों से सीखकर पुनः प्रयास किया जाये।

क्या आपने कभी इस बात पर गौर किया है कि गणित का आरंभ हमारे जीवन में संख्याओं के रूप में होता है, फिर उन संख्याओं का जोड़ घटाना, गुणा, भाग, फिर इबाराती प्रश्न, सूत्र, विधियाँ आदि। याद है जब पहली बार आपने गणित का सवाल देखा कि यदि मोहन के पास 10 आम हैं, उसने 2 आम सोहन व 2 आम रोहन को दिया और मोहन के पास कितने आम बचे? कितना डरा देते थे ये सवाल। आज यही सवाल कितना छोटा लगता है। समय के साथ गणित के सवालों की जटिलता बढ़ती जाती है। उसी प्रकार समय के साथ हमारे जीवन की समस्याएं नए रूप में आती हैं, बस आवश्यकता होती है तो बीती कक्षाओं और पाठों को, उसमें सीखे गए जोड़, घटाओं, गुण, भाग और वो सूत्र जो आपने समय के साथ सीखे हैं सही तरीके से धैर्य और तर्कशक्ति के साथ लागू किये जाये।

--00--



## भारतीय किसान की सगुड़ि हेतु विज्ञान की नई ओट

(पोर्टेबल ए.आई. संचालित मृदा स्वास्थ्य विश्लेषण एवं अनुशंसा उपकरण)

डॉ. रश्मि जायसवाल  
सहायक प्राध्यापक - भौतिकी

### प्रस्तावना

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में किसान को सबसे बड़ी पूँजी उसकी भूमि है। अच्छी फसल का रहस्य केवल बीज, खार और पानी में नहीं, बल्कि उस मिट्टी के स्वास्थ्य में छिपा है जिसमें बीज बोया जाता है। यदि मिट्टी में पर्याप्त नमी न हो, पोषक तत्व असंतुलित हों, pH स्तर उचित न रहे या तापमान अनुकूल न हो, तो चाहे किसान कितनी ही मेहनत क्यों न करे, फसल वांछित उपज नहीं दे पाती।

आज तक किसान को मिट्टी की जाँच के लिए अपने खेत से नमूने लेकर प्रयोगशाला भेजने पड़ते हैं। रिपोर्ट आने में कई दिन लग जाते हैं और इस बीच किसान सिंचाई या उर्वरक प्रबंधन में गलतियों कर बैठता है। इसका परिणाम यह होता है कि उत्पादन घट जाता है और लागत बढ़ जाती है।

इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखकर मैंने यह उपकरण विकसित किया है, जो वर्तमान में भारत सरकार के पोस्टेड प्राधिकरण के समक्ष स्वीकृति हेतु प्रस्तुत है। इस आविष्कार में मुझे कृषि क्षेत्र के अनुभवी विशेषज्ञ डॉ. अभय चन्द्र पॉल (कृषि विस्तार अधिकारी, शासकीय सिसल फार्म, चोरभट्टी, बिलासपुर) का सहयोग प्राप्त हुआ है।

### आविष्कार की संकल्पना

यह उपकरण एक पोर्टेबल ए.आई. (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) आधारित मृदा स्वास्थ्य विश्लेषण एवं अनुशंसा यंत्र है। साधारण शब्दों में कहें तो यह एक ऐसा स्मार्ट यंत्र है जिसे किसान अपने खेत में कहीं भी गाड़कर तुरंत मिट्टी की स्थिति जान सकते हैं। यह केवल आँकड़े ही नहीं बताता, बल्कि आँकड़ों के आधार पर किसान को सलाह भी देता है, कब सिंचाई करनी है, कितनी खार डालनी है और कौन-सी फसल उपयुक्त रहेगी।

### संरचना और तकनीकी पक्ष

1. प्रोब शाफ्ट (Probe Shaft)
  - स्टेनलेस स्टील से निर्मित लंबा और नुकीला डंडा।
  - सोधे मिट्टी में गाड़ने पर विभिन्न संसेर सक्रिय हो जाते हैं।
2. कॉम्पैक्ट हाउसिंग यूनिट (Compact Housing Unit)

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकारी (छ.ग.)

- इसमें डिजिटल स्क्रीन, गैंगरॉयन घटन, रिचार्जबल बैटरी और वायरलेस कनेक्शन की सुविधा है।
- इसमें लगा ए.आई. प्रोसेसर आँकड़ों को तुरंत प्रोसेस करता है।

### 3. संसेर समूह (Sensor Array)

- नमी मापक (Moisture Sensor)
- तापमान मापक (Thermistor)
- pH मापक
- पोषक तत्वों की जाँच हेतु विशेष इलेक्ट्रोड (NPK: नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटैशियम)

### कार्य प्रणाली

किसान उपकरण के प्रोब को मिट्टी में गाड़ता है। संसेर स्वतः मिट्टी की नमी, pH, तापमान और पोषक तत्वों को माप लेते हैं। ए.आई. प्रोसेसर आँकड़ों की तुलना पुराने मौसम डेटा, मृदा प्रोफाइल और फसल की जरूरतों से करता है। कुछ ही क्षणों में स्क्रीन पर परिणाम प्रदर्शित हो जाते हैं। किसान को स्पष्ट अनुशंसा प्राप्त होती है जैसे "48 घंटे में सिंचाई करें" या "30 किलो नाइट्रोजन प्रति एकड़ डालें"। डेटा मोबाइल एप/क्लाउड प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध हो सकता है, जिससे मातृव्य की योजना बनाना और भी सरल हो जाता है।

### विशेष खूबियाँ

- बहुउद्देश्यीय परीक्षण : नमी, pH, तापमान और पोषक तत्व एक ही यंत्र से।
  - तुरंत परिणाम और सलाह - प्रयोगशाला में प्रतीक्षा की आवश्यकता नहीं।
  - ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों मोड : बिना नेटवर्क भी कार्यशील।
  - मैलन के लिए उपयुक्त : जलरोधक और धूलरोधक संरचना।
  - सटीक कृषि (Precision Farming) : केवल आवश्यक मात्रा में खार-पानी का प्रयोग।
- उदाहरण : मक्का की खेती
- मान लीजिए किसान मक्का बोना चाहता है। उपकरण परीक्षण करके बताता है -
- नमी: 22 : (कम है, जबकि मक्का हेतु 28-32: उचित है)
- pH: 6.2 (सीमा के भीतर)
- नाइट्रोजन 18 PPM (बहुत कम)
- पोटैशियम अपर्याप्त
- उपकरण की अनुशंसा -
- 48 घंटों के भीतर सिंचाई करें।

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकारी (छ.ग.)

- प्रति एकड़ 30 किलो नाइट्रोजन खाद डालें।
- जुलाई से पहले पौधेशिखम उर्वरक का प्रयोग करें।
- इससे किसान समय पर सही कदम उठाकर अधिक उपज और कम लागत सुनिश्चित कर सकता है।

**निष्कर्ष**

यह उपकरण केवल एक मूरा परीक्षण यंत्र नहीं, बल्कि किसान का वैज्ञानिक सलाहकार है। यह मूरा का स्वास्थ्य बताने के साथ-साथ सही निर्णय लेने में मार्गदर्शन करता है। इससे खेती अधिक सतत, किफायती और उत्पादक बनती है।

भारत सरकार के समक्ष पेटेंट हेतु प्रस्तुत यह आविष्कार भविष्य में भारतीय कृषि को 'स्मार्ट फार्मिंग' की दिशा में अग्रसर करने वाला एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा।



जो सिद्धर मिटावे निकले थे,  
उन्हें भिदटी में भिलाया है  
जो हिंदुस्तान का लहू बहाते थे, आज  
कतरे-कतरे का हिस्साब चुकाया है ...  
जो सोचते थे भारत चुप रहेशा,  
वो आज घसों में दुबके पड़े हैं  
जो अपने ढथियारों पर घमंड करते थे,  
आज वो भलबे में दूबे हुए हैं ...  
ये शोध-प्रतिशोध का खेत नहीं है,  
ये न्याय का नया स्वरूप है

ये ऑपरेशन सिद्धर है, ये सिर्फ आढोश  
नहीं है, ये समस्त भारत का सौद्र रूप है ...  
ये भारत का नया स्वरूप है, पहले घर में  
घुस कर किया था चार, अब सीधा सीने  
पर किया प्रहार है ...

आतंक का फन कुचलने की  
दाही सीति है, दाही नीति है  
दाहीं भारत है, नया भारत है ...

**Mental Health Matters : Dealing with Stress, Anxiety and Burnout**

Ankita Shrivastava  
Assistant Professor - Economics



Mental pain is less dramatic than physical pain, but it is more common and also more hard to bear. The frequent attempt to conceal mental pain increases the burden : It is easier to say 'My tooth is aching' than to say 'My heart is broken'.

College life is an exciting journey filled with new experience, academic challenges and personal growth. However it also brings a fair share of stress and anxiety. From managing coursework to handling social pressures, student often find themselves overwhelmed. While stress is a natural part of life, excessive anxiety can negatively impact mental health.

Your mental well being is just as important as your physical health. Ignoring mental health can lead to burnout, anxiety, depression and even physical health issues. To address stress, anxiety and burnout prioritize self-care, Practice mindfulness, engage in regular physical activity, maintain a healthy lifestyle and seek support from others when needed. Some more useful breakdown of how to manage stress, anxiety and burnout are identify and address stressor : Identify the specific situations, people or thoughts that trigger your stress, anxiety or burnout. Once you know what's causing the stress take steps to address it. Practice self care : prioritise sleep, eat a balanced diet, stay hydrated, engage in enjoyable activities, connect with loved ones. Manage anxiety by learn about anxiety, challenge negative thoughts. To prevent and manage burnout set realistic goals, take breaks, practice self compassion and seek support, create a work-life balance and identify and address the root cause of burnout.

College is a time of learning, exploration and growth. While stress and anxiety are common, they should not control your experience. By adopting healthy lifestyle and seeking support when needed, students can navigate college life with confidence and resilience. Remember, mental health matters - take care of yourself and encourage others to do the same.

**"You are not weak for struggling : you are strong for facing your battles head - on."**

--00--

**इतना खुश रहे कि बुनियाद परेशान हो जाए कि इसे किस बात की खुशी है।**

## विद्यासत के आइने में राधाबाद - डॉ. फूलदास महंत

लक्ष्य



पृष्ठभूमि :-

पूर्वी मध्यप्रदेश के आदिवासी बहुल जिले का सदर मुकाम है की राधाबाद। विद्यासत काल,

यह राजधानी थी। राधाबाद, नदी-नालों, पहाड़ों से घिरा हुआ है। गाजमार पर्वत पर स्थित हनुमान मंदिर से देखो तो रात में यह भायानगरी सा प्रतीत होता है। राजा भूपदेव सिंह के जमाने में (1894-1917) यहाँ की कुल आबादी उसके हजार की थी, वर्तमान में एक लाख के करीब है।

राधाबाद, रथयात्रा, गणेश-मेला, झूला मेला, रामलीला, दुर्गा पूजा, आई हास्पीटल, पॉलीटेक्नीक कॉलेज, जेटमिल के लिए प्रख्यात है। राधाबाद चावल, इमारती लकड़ी, वनोपज, खनिज सम्पदा और सोने की तस्करी के लिए प्रसिद्ध है। अखबार की सूखियां बतलाती हैं, बरसात के दिनों में यहाँ से राजाना एक करोड़ रुपये के कच्चे सोने की तस्करी होती है। ईब और मांड की सहायक नदियों में 92 प्रतिशत शुद्ध सोना पाया जाता है।

सेठ किराड़ीमल ने राहर को राहर जैसा बनाया था। सदर में किला नुमा गद्दी, स्टेसन के सामने विद्याल नटर हाई स्कूल, पॉलिटेक्निक कॉलेज, नेत्र और महिला चिकित्सालय तथा मुख्य चिकित्सालय की विद्याल इमारते किसने बनवायी ? उनके मुनीम तक के नाम से यहां कॉलेज है। सेठ किराड़ीमल दानवीर थे। गौरी शंकर मंदिर और बूजी भवन उनकी दानशीलता की लहराती कीर्ति पताकाएं हैं। सबसे पहले यहां एक जूट मिल थी। मध्यप्रदेश की इकलौती जूट मिल-जहाँ बिहारी भाईयों का वर्चस्व था और जो यहाँ के होकर रह गये। वर्तमान में करोड़ों की लागत से स्थापित जिंदला स्टील्स एण्ड पावर लिमिटेड है, जो कई महत्वाकांक्षी समाजोपयोगी कार्यों के लिए कटिबद्ध है। राधाबाद नगर के सौन्दर्य और कला-संस्कृति के उन्मयन में उनका योगदान महत्वपूर्ण है।

पुरातत्व :-

आदि मानव के आरंभिक चरण जहाँ भी पड़े हों, लेकिन उसकी आदिम सभ्यता और संस्कृति के अवशेष राधाबाद के आसपास की दुर्गम पहाड़ियों के शैलाश्रयों और केले नदी की रेत में ही पाये जाते हैं। डॉ. सांकलिया तथा पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय जैसे ख्यातिलब्ध पुरातत्व वेत्ता राधाबाद के आसपास के क्षेत्र को आदिम सभ्यता का केन्द्र मानते हैं। भले ही ईब और माण्ड की सहायक नदी 'सोन' की रेत जैसी केले की रेत, स्पर्णाकण नहीं उगलती तथापि उसके तट क्वार्ट्ज़ाइट पत्थर से बने पुराण युगीन उपकरणों से पड़े हैं। ये भले ही घिस चुके हैं लेकिन आकृति से पशु, खुरचनी, हस्तकुठार और कुल्हाड़ियों की पहचान उकेरती नजर आती है। इसी प्रकार राधाबाद के आसपास विश्व प्रसिद्ध सिधनपुर की गुफाएं, बसनाझर, और कबरा पहाड़ के शैलाश्रय हैं। इनकी निकटतम दूरी 12 कि.मी. और अधिकतम दूरी 20 कि.मी. है। कबरा पहाड़ के शैलाश्रय पूर्वमुखी हैं जबकि सिधनपुर की गुफाओं के शैलाश्रय दक्षिणमुखी हैं। इन तीनों शैलाश्रयों में आदिमानव द्वारा बादामी पत्थर पर उकेरे गए चित्र हैं। इनमें गौह, सरीसृप, वनभैंसा, हाथी, हिरण, पुरातात्विक दृष्टि से राधाबाद विश्व मानचित्र शिक्षार

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी (छ.ग.)

तथा चक्र का रेखांकन है। पर स्पष्ट रूप से अंकित है। काविर मवाणी शंकर पडंगी ने अपने सहयोगी मित्रों के साथ इन आणव्यक सम्पदाओं का सर्वेक्षण किया था। इस क्षेत्र में पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय, वरिष्ठ पत्रकार अनुपम कुमार दास एवं रविन्द्र मिश्रा ने बहुत कुछ लिख दिया है।

इतिहास :-

ऐतिहासिक दृष्टि से भी राधाबाद का अपना अलग स्थान है। संदल प्राक्निस्त्रेज गर्जेटियर (ई.एम. ब्रेट) के अनुसार इस राजवंश में मदन सिंह, तखतसिंह, बेट सिंह, दिरीय सिंह, ज़ुझर सिंह, देवनाथ सिंह, बनरयाम सिंह, और भूपदेव सिंह जैसे आठ शासक हुए। बाद में नटर सिंह (1917) और उनके उत्प्रांत मंत्राले राजकुमार चक्रधर सिंह तरोप्रांत उनके पुत्र ललित कुमार सिंह अन्य तीन याने कुल 11 शासक हुए। राधाबाद, सम्बलपुर के अठारह गाडजातों में एक था। इतिहास साक्षी है राधाबाद स्टेट 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों का मददगार रहा। 1862 में पिता की मृत्यु के बाद बनरयाम सिंह गद्दी पर बैठे, अयोग्यता के कारण वह अंग्रेजों का सामन्त बन बैठे। उसके बाद उनके पुत्र भूपदेव सिंह शासक हुए जो प्रजावत्सल, न्यायप्रिय और गुणी शासक थे। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को रेल लाईन के लिए 35 मोल की लंबी जमीन देकर राय बहादुर का फतवा हासिल किया था।

नृत्य संगीत :-

राजा भूपदेव सिंह ने अपने द्वितीय पुत्र नन्हें महाराज के जन्मोत्सव पर मोती महल का निर्माण कराया और 'गणेशोत्सव' को राजकीय उत्सव के रूप में प्रारंभ किया। इसको देशव्यापी ख्याति मिली। एक महौने तक चलने वाले इस महोत्सव में छोटे बड़े कलाकार देश के कोने-कोने से आते थे। तलवार की धार पर नृत्य करने वाले नेपाल के दरबारी कलाकार श्री गिरधारी लाल का उन्होंने अपने दरबार में सन् 1912 में सम्मान किया था। इसी प्रकार उन्होंने सन् 1916 में आचार्य जगन्नाथ भानू को दरबार में साहित्यचार्य की उपाधि से विभूषित किया था। उनके दरबार में अनन्त राम पाण्डेय जैसे बाल भारती के सुलेखक कवि, आलोचक मौजूद थे। उनके यहां कलागीतुरी शोरी शायरी का प्रचलन था। इन्होंने लोक और शास्त्रीय कलाओं को अपने दरबार में फलने-फूलने का यथेष्ट अवसर दिया। इसी पृष्ठभूमि पर राजा चक्रधर सिंह ने नृत्य और संगीत को नया आयाम दिया। पं. मुकुटधर पाण्डेय के शब्दों में सन् 1931 में जब चक्रधर सिंह को राज्यधिकार प्राप्त हुआ तब गणेशोत्सव में चार चार जड़ गए थे उसकी सांस्कृतिक छवि निखर उठी थी। राधाबाद की धरा ललित कलाओं की क्रीड़ा भूमि बन गयी थी।

नन्हें महाराज, अर्थात् चक्रधर सिंह बचपन से ही नृत्य-संगीत के प्रति अनुक्त थे। उन्होंने अपने चाचा लाल नारायण सिंह, ठाकुर लक्ष्मण सिंह और मुनीर खां से तबले की, पं. शिवनारायण और पं. सीताराम से नृत्य की तथा नन्हें बाबू से गायन की शिक्षा ली थी। नृत्य और संगीत के कारण ही उन्होंने राजकुमार कॉलेज, रायपुर से सना के लिए नाता तोड़ लिया था। साहित्य के क्षेत्र में पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी, भानू कवि, पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय और बलदेव प्रसाद मिश्र उनके पथ प्रदर्शक रहे। राजा चक्रधर सिंह के शासन काल में राधाबाद नृत्य संगीत

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी (छ.ग.)

और साहित्य का त्रिवेणी संगम बन गया। उन्होंने बादल महल और टाउन हॉल का निर्माण करा। अर्थों के विकास के लिए कराया था। अन्य विधाओं की अपेक्षा उन्होंने 'कथक नृत्य' के विकास में ऐतिहासिक योगदान दिया है। उन्होंने जयपुर से पं. जयलाल, लखनऊ से अख्तर महाराज और अन्य शताधिक आचार्यों को बुलाकर, कार्तिकराम, कल्याणदास, फिरदौदास, अनुजराग, और बार्नालाल जैसे गम्मत में नाचने वाले बाल कलाकारों को कथक जैसे शास्त्रीय नृत्य की उच्च शिक्षा दिलवायी जो आगे चलकर देश के मशहूर नर्तक हुए। रायगढ़ दरबार में लखनऊ और जयपुर दोनों धाराओं की शिक्षा शिष्यों को लेनी पड़ती थी। राजा साहब प्रमुख आचार्यों को अपने द्वारा आविष्कृत नृत्यों के प्रकटिकरण हेतु सभा मध्य बुलाते, फिर स्वयं करके दिखलाते।

रायगढ़ धराने के अस्तित्व का सबसे बड़ा आधार राजा साहब द्वारा रचित नये नये बोल और चक्रकर वार परण है। नर्तन सर्वस्व, तालीय निधि, पुष्पाकर में संकलित हैं। रागरत्न मंजूषा, मुरजपरण पुष्पाकर और तालबल उनके शिष्य अधिकांशतया उन्हीं की रचनाओं को प्रदर्शित करते हैं। इस उपक्रम के द्वारा गत - भाव और लयकारी में विशेष परिवर्तन हुए। यहां कड़क बिजली, दल-बादल, गज-परण, किलकिला-परण, जैसे सैकड़ों बोल प्रकृति के उपादानों, झरनों, बादलों और पशु पक्षियों के गं ध्वनियों पर आधारित हैं। जाति और स्वभाव के अनुसार यदि इन्का प्रदर्शन किया जाय तो ये मूर्त हो उठते हैं। इसी प्रकार यहां से 283 मात्राओं तक के तालों की रचना हुई, जो ऐतिहासिक घटना है। ये बोल इतने ध्वन्यात्मक हैं कि पढ़ते ही अर्थ छविगंध खुलने लगती हैं। भाव प्रदर्शन के साथ ही रस निष्पत्ति होने लगती है। अधिजात्य संस्कारों से जुड़े यहां के कथक नृत्य ने लोक नृत्य का लालित्य, उद्गम आवेश और जीवन्त स्पन्दन है। राजा चक्रधर सिंह के नाम पर मध्यप्रदेश शासन ने चक्रधर नृत्य केन्द्र की स्थापना कर एक प्रशंसीय कार्य तो किया ही है, इससे रायगढ़ कथक धराने पर एक स्पष्ट मुहर लगा जाती है।

**सांस्कृतिक विरासत :-**

राजा साहब में मौलिक प्रतिभा की कमी नहीं थी। वे कई भाषाओं के जानकार थे, तथापि उनके दरबार में व्याकरणार्थ पं. सदाशिवदास शर्मा, साहित्याचार्य भगवानदास, सार्वतीर्थ शास्त्र प्रसाद, कविवर जानकी वल्लभास्त्री, भूषण महाराज जैसे 21 महापंडित समादृत होते थे। राजा साहब ने इनकी सहायता से दर्जनों ग्रंथ की रचना की। पं. मुकुटधर पाण्डेय के शब्दों में राजा चक्रधर सिंह रायगढ़ नगरी के 'भोज' थे। अकबर और बाजिर अली शाह की भांति राजा चक्रधर सिंह नृत्य और संगीत के महान संरक्षक और सर्जक थे। बीसवीं सदी का शासक ही कोई बड़ा कलाकार होगा, जो रायगढ़ दरबार में समादृत न हुआ होगा। देश के कोने कोने से आये हुए कलाकार, बाजीगर, तवायफें और लोक कलाकारों का उनके दरबार में जमघट लगा रहता था। तंत्रीनार कवित्व रस में डूबे राजा अपने समय के प्रख्यात तबला वादक और ताण्डव नृत्य के अद्वितीय नर्तक थे। इसलिए 1939 में अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन में भारतीय नरेशों के सामने वाइसराय ने उन्हें 'संगीत सम्राट' की उपाधि से विभूषित किया था। पं. विष्णु दिगम्बर और पं. ओंकारनाथ ठाकुर की उन पर बड़ी कृपा थी। बालक

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी (छ.ग.)

मनहर चर्च ने उनके सामक्ष टाउन हॉल में अपनी श्रेष्ठ कला का परिचय दिया था। इन्हीं गुणों के कारण राजा साहब अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन के दो दो बार अध्यक्ष चुने गए थे। एक समय था जब उनके शिष्य कार्तिक राम, कल्याण दास, फिरदौदास महाराज और वर्धन लाल की पूरे देश में धूम थी। फिरदौदास महाराज को छोड़ अन्य तीन कलाकारों को मध्यप्रदेश के संस्कृति विभाग ने शिखर सम्मान से सम्मानित किया था।

एक समय साहित्य के लिए यहां 'चक्रधर पुरस्कार' चलता था। राम कुमार वर्मा और रामेधर शुक्ल 'अंचल' जैसे युवा कवि यह पुरस्कार प्राप्त कर चुके थे। पिछले 20 वर्षों से चक्रधर ललित कला केन्द्र, रायगढ़ संगीत नाट्य अकादमी की स्थापना के लिए प्रयत्नशील है। चक्रधर संगीत विद्यालय, लक्ष्मण संगीत विद्यालय एवं वैष्णव संगीत विद्यालय में शताधिक छात्र-छात्रायें नियमित शिक्षा ले रहे हैं। रामलाल नृत्याचार्य, कथक केन्द्र भोपाल में, बासन्ती वैष्णव एवं सुनील वैष्णव विलासपुर में तथा रायगढ़ में वेदम्पी सिंह, जगदीश मेहर, मनहरण सिंह ठाकुर, राजेन्द्र विश्वकर्मा, राधेलाल गजपिये, निभाई चरण पण्डा, चन्द्रकला देवांगन, देवलाल देवांगन, राममूर्ति वैष्णव, और उनके सुपुत्र शारद वैष्णव तथा इंदिरा संगीत विद्यालय रायगढ़ में, श्री सुरेश दुबे संगीत के विधा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

**साहित्य :-**

रायगढ़ न केवल नृत्य संगीत अपितु साहित्य के लिए भी ख्यात है, डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन ने भी इसे साहित्य का तपोवन कहा है। पुरातात्विक और साहित्यिक वर्चस्व के पर्याय साहित्य वाचस्पति पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय और उनके अनुज छायावाद के प्रवर्तक कवि पद्मश्री पं. मुकुटधर पाण्डेय के कारण, अर्ध शताब्दी तक रायगढ़ साहित्यकारों का तीर्थस्थल रहा। देश में साहित्यिक आंदोलन के भीष्म पिता कहे जाने वाले पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय ब्रज और खड़ी बोली के नये पुराने कवियों के अनुवा थे। मात्र 23-24 वर्ष की उम्र में उनके द्वारा सम्पादित कविता 'कुसुम-माला' जैसे ऐतिहासिक महत्त्व का काव्य संकलन इसका प्रमाण है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी तक उनका लोहा मानते थे, आचार्य द्विवेदी के सेनापति यदि भीधलीशरण गुप्त थे तो 'आचार्य जगन्नाथ भाट्ट' के सेनापति पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय थे। दोनों हम उम्र के मित्रों ने तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में एक दूसरे पर जमकर प्रहार किया था। रायगढ़ की साहित्य साधना को डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र, आनन्द मोहन बाजपेयी, आचार्य विनय मोहन शर्मा, प्रभुदयाल अग्निहोत्री तथा श्री रामेधर शबु अंचल जैसे यशस्वी साहित्यकारों ने और अधिक उर्चा बनाया था।

रायगढ़ साहित्यकारों की साधना स्थली है। समकालीन साहित्य के शीर्ष हस्ताक्षर स्व. प्रमोद वर्मा ने दर्जनों ग्रंथ लिखकर हिन्दी के भण्डार में श्रीवृद्धि की है, जिनमें शरोमान की वापसी, हलफनामा और कविता की किताब बुलाने से नहीं आती नदी पिछले दो दशकों से चर्चित रही है। अशोक कुमार झा जैसे दबा अलोचक एक समय कल्पना और सारिका जैसे श्रेष्ठ पत्रिकाओं की शोभा बढ़ाते थे। गुरुदेव कारयप चौबे ने मुक्तिबोध की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए 'अभिधापन उत्कल' लिखकर पुनः अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है। जैसे उनके प्रथम

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी (छ.ग.)

काव्य संकलन 'धूप का एक दिन' के लिए मध्यप्रदेश साहित्य परिषद् भोपाल ने उन्हें पुरस्कृत किया था। प्रभात त्रिपाठी न केवल राष्ट्रीय स्तर के आलोचक कहानीकार, उपन्यास लेखक हैं बल्कि समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर भी हैं। 'खिड़की से बरसात' काव्य संकलन से उन्होंने अपनी पहचान बनायी है।

जातीय परम्परा के आद्वितीय कवि आनन्दी सहाय शुक्ल अपने समय के एक सशक्त गीत हस्ताक्षर हैं। धर्मगुण, नवनीत एवं चतुष्पा जैसे दर्जनों पत्रिकाओं में वे 1957 से छपते रहे हैं। 'नय लोकतंत्र और नथनी हाट बिकानी' कविता संकलन इनकी चिरस्थायी ख्याति के लिए पर्याप्त है। रायगढ़ के ही मुस्तफा हुसैन रसुरिफकर के असमय देहात से साहित्य जगत को अपूर्णगीय क्षति हुई है। 'फिक' में भी रायगढ़ी' उनका एकमात्र गजल संग्रह है। डॉ. बिहारी लाल साहू हिन्दी और छत्तीसगढ़ी के अधिकारी विद्वान हैं। प्रहेलिकाओं पर उनकी एक कृति इस समय चर्चा के केंद्र में है। 'सुरूज पोटासि अधीयार' जैसे कहानी संकलन के आधार पर उन्हें छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधि कहानीकार माना जा सकता है। डॉ. बलदेव साव की साहित्य तपस्या को आज के युवा साहित्यकार अपने साथ लेकर चल रहे हैं, हिन्दी, छत्तीसगढ़ी तथा आलोचना तथा समीक्षा के लिए वे सुविख्यात हैं। प्रोफेसर अब्बिका वर्मा, प्रोफेसर मिदिनी प्रसार नायक, डॉ. मोनकेतन प्रधान, प्रोफेसर दिलीप अम्बेला, डॉ. उषा आठले साहित्य में 'मूल्य एवं आस्था' के लिए सतत प्रयत्नशील हैं।

पत्रकारों की लंबी फेहरिस्त है, जिसमें सर्व श्री बालेन दा बनबल, गुरूदेव कारभरप चौबे, अनुपम दास गुप्ता, सत्यनारायण अग्रवाल, वासुदेव मोदी, अनिल रतोरिया, अखिल पाण्डेय, राजकुमार गुप्ता, विनोद उपाध्याय, सुभाष त्रिपाठी, युवराज सिंह आजाद, हेमंत धवाइत, दिनेश मिश्रा, सनत चौहान श्री भोटियार आदि प्रमुख हैं। जिन्होंने अपनी कलम की धार से छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण आंदोलन को दिशा दी। यदि रंगकर्मियों की चर्चा न की जाय तो बात अधूरी ही रहेगी। इस दिशा में श्री उमाशंकर चौबे, डॉ. श्रीमती उषा आठले, अजय आठले, योगेन्द्र चौबे, हुशेन्द्र शर्मा प्रदेश के चर्चित रंगकर्मियों में से हैं।

निष्कर्षतः विरासत के आढ़ने में जो तस्वीर उभर कर आज उपस्थित हो रही है उसके पीछे उसके पुष्टभूमि को सहेज, संवारकर रखना एवं उसके आधारभूत तत्वों, रहस्यों को जानना आवश्यक है तभी हम अपनी अक्षुण्ण साहित्य, संगीत, संस्कृति नृत्यकला को संरक्षित एवं सुरक्षित रख सकते हैं, आवश्यकता है कि हम समय समय पर अपने विरासत को पहचानें।

**सद्गुणों की शुरुआत स्वयं से ही करनी होती है,  
जब तक खुद की ऊंचाई पर कुठाकुठा नहीं लगेगा तब तक  
दूसरे के लगाट पर तिलक कैसे लगा सकते हैं।**

**ऐसी क्या रथाशियत है, छत्तीसगढ़ के विद्यार्थियों में - आइये जानते हैं**

डॉ. फूलदास महंत  
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष - हिन्दी

फिसी भी देश राज्य की पहचान वहां के रहवासियों की लोकभाषा, लोक साहित्य लोककला एवं सांस्कृतिक परम्पराओं से होती है। छत्तीसगढ़िया लोगों की लोकभाषा, लोककला, सांस्कृतिक परम्पराएँ तथा यहाँ के लोगों की पृथक सामाजिक संरचना ही थी, जिसके लिए पृथक छत्तीसगढ़ राज्य की मांग की लड़ाई यहाँ के साहित्यकार, इतिहासकार और लोक कलाकार लड़ रहे थे, उतना कोई नहीं। वास्तव में यह लड़ाई छत्तीसगढ़ के छत्तीसगढ़िया लोगों की अस्मिता की रक्षा की लड़ाई थी, जो मध्यप्रदेश के साथ रहते हुए अपनी कोई पृथक पहचान नहीं बना पा रही थी। भोपाल स्थित सत्ता के केंद्र में हमें छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक परम्पराओं का कोई मूल्य नहीं था, उसके लिए अंग्रेजी भाषा तो अपनी थी, किन्तु मध्यप्रदेश में छत्तीसगढ़ी भाषा अजनबी थी। छत्तीसगढ़ी होना उनकी दृष्टि में पिछड़ा और अविक्सित होना था।

सन् 1956 में "छत्तीसगढ़ी महासभा" का प्रथम सम्मेलन "राजनांदगांव" में आयोजित हुआ, इस महासभा में छत्तीसगढ़ी लोकभाषा, लोक साहित्य, लोककलाओं, लोक संस्कृति की रक्षा के लिए 'उप-समिति' गठित की गई जिसका संयोजक वरिष्ठ साहित्यकार "हरि ठाकुर" जी को बनाया गया। उप समिति के सदस्य स्व. रामचन्द्र देशमुख एवं स्व. धरमलाल करभरप को उन्होंने सिनेमा, दूरदर्शन के प्रति आकर्षण के बावजूद "चंदेनी गोंद" को जबरदस्त लोकप्रियता दिलाई, जहाँ भी 'चंदेनी-गोंद' का मंचन होता 50 से 60 हजार तक की भीड़ दर्शकों का होता था, छत्तीसगढ़ियापन की खासियत देखिए उन्होंने लोककला का व्यवसायीकरण और राजनीतिकरण नहीं होने दिया। यही कारण है कि उन्हें न पद्मश्री की उपाधि के योग्य समझा गया, न राज्य सभा के सदस्य के लायक।

बात अब बहुत ध्यान देने की है, जो लोग छत्तीसगढ़ के इतिहास और संस्कृति से भली-भांति परिचित हैं, वे जानते हैं कि छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति, लोककला तथा छत्तीसगढ़ की सामाजिक संरचना देश के किसी भी क्षेत्र से पिछड़ी नहीं रही। पिछड़ेपन का आरोप तो हमारे ऊपर आयातित लोगों ने अपनी श्रेष्ठता हमारे ऊपर लादने के लिये धोपा है।

आज से 235 वर्ष पहले सन् 1970 में एक अंग्रेजी यात्री 'लेकी' छत्तीसगढ़ के प्रवास पर आए थे, उन्होंने छत्तीसगढ़ के निवासियों के विषय में लिखा, वह दृष्टय है -

"THE PEOPLE ARE REMARKABLY CIVIL XXX A JOURNEY OF ONE MONTH AND FORTEN DAYS THROUGH ONE OF THE MOST INHOSPITBLE CONTRIST HAVE SEEN IN INDIA"

अर्थात् "छत्तीसगढ़ के लोग उल्लेखनीय रूप से सभ्य हैं। इस क्षेत्र में एक माह चौदह दिनों के प्रवास में यहाँ के निवासियों में जो आतिथ्य परायणता पायी गयी, वह देश के अन्य किसी क्षेत्र में नहीं पायी जाती है।

एक और तथ्य उजागर हुआ है - अठारहवीं शताब्दी के ही एक अंग्रेज अधिकारी मेजर "एगन्यू" ने छत्तीसगढ़ के निवासियों के विषय में लिखा - "छत्तीसगढ़ के लोगों का नैतिक चरित्र देश के अन्य क्षेत्रों के निवासियों की तुलना में श्रेष्ठ है। वे ईमानदार" अपराधों से दूर तथा देश के अन्य क्षेत्रों की तुलना में सत्य के प्रति अधिक निष्ठावान हैं। ये लोग अत्यधिक स्वच्छता पसंद होते हैं।"

मेजर एगन्यू एक शासक (अधिकारी) के रूप में छत्तीसगढ़ में आठ वर्षों (सन् 1818 से 1825) तक रहे। किन्तु इन दोनों ने यही के निवासियों के प्रति अपने जो विचार प्रस्तुत किये हैं, वे एक दूसरे के कथन का समर्थन करते हैं। उन्होंने यहाँ के निवासियों को जैसा देखा, उनकी जीवन प्रणाली का अध्ययन किया, उसका निष्पक्ष विवरण अपने शब्दों में प्रस्तुत कर सकते थे। किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया, वह ईमानदारी के साथ लिख दिया।

निकर - लेकी तथा मेजर एगन्यू द्वारा छत्तीसगढ़ के निवासियों के विषय में ये विचार कि यहाँ के लोग उल्लेखनीय रूप से सभ्य हैं, अतिथि परायण हैं, अपराधों से दूर रहते हैं, ईमानदार हैं, सत्य के प्रति निष्ठावान हैं उनका नैतिक चरित्र श्रेष्ठ है, वे अत्यधिक स्वच्छता पसंद हैं, यदि इस क्षेत्र का पिछड़ापन है तो हम पिछड़े रहना ही पसंद करेंगे। तुम्हारी छद्म सभ्यता और विकास की झूठी अवधारणा तुम्हें ही हो मुबारका ऊँचे पदों पर बैठने से अपनी जिजीरिशों में बेहिसाब का साधन बदोर्ने, आत्मीयान बंगालों रहने से चमचमाती कारो में घूमने से, बड़ी-बड़ी विप्रिया हासिल कर लेने से ही यदि कोई सभ्य हो जाता है, सत्य और निष्ठावान हो जाता है और बाकी लोग उनकी दृष्टि में जाहिल गांवर और पिछड़े हो जाते हैं, ऐसा जिस सभ्य में लिखा है, वह सभ्य उन्हें मुबारका।

इतिहासकार डॉ. हीरालाल शुक्ला ने लिखा है - "सभ्यताओं के इतिहास में छत्तीसगढ़ की सभ्यता की एक विशेष पहचान और अस्मिता है" आइये हम अपनी खासियत को पहचानें और यहाँ की सांस्कृतिक मूल्यों परंपराओं सत्य ईमानदारी और अतिथि देवों भव की रक्षा को सशक्त बनाएँ।

**कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं है, बस मजबूत इरादों के साथ आगे बढ़ते रहो। हार मानना हमारी कमजोरी नहीं, बल्कि हमारी साफलता का पहला कदम है। द्युद पर भरोसा रखो, आपके अपने आपकी मेहनत से ही सब होंगे। जब तक आप द्युद पर विश्वास नहीं करेंगे, तब तक कोई दूसरा भी नहीं करेगा।"**

### छत्तीसगढ़ी के शब्दों को जानना हमारे लिये क्यों जरूरी ?

डॉ. रवेता जायसवाल  
सहायक प्राध्यापक - भौतिक शास्त्र

हम छत्तीसगढ़ के निवासी हैं, हमारी मातृभाषा छत्तीसगढ़ी है। मध्यप्रदेश राज्य में सम्मिलित छत्तीसगढ़ को आज 25 वर्ष पूरे हो रहे हैं, पृथक हुए, राज्य सरकार ने छत्तीसगढ़ी को 28 नवम्बर 2007 को "राजभाषा" का दर्जा प्रदान कर दिया है, हम प्रतिवर्ष 28 नवम्बर को "छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस के रूप में मनाते आ रहे हैं। प्रदेश के विश्वविद्यालयों और पत्र-पत्रिकाओं, टी.व्ही. रेडियो सभी में आज छत्तीसगढ़ी भाषा का प्रचलन तेजी से हो रहा है, फिर भी हम छत्तीसगढ़ी के बहुत से शब्दों को हिन्दी से छत्तीसगढ़ी में रूपांतरित नहीं कर सकते हैं। इसी को ध्यान में रखकर मैंने यहाँ कुछ हिन्दी के पदों का छत्तीसगढ़ी रूप प्रस्तुत कर रही हूँ। ज्ञानवर्धन के लिए यह आवश्यक है देखिए -

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी	पैर में चपल	भर्दई
कन्धा	- खन्धा/खांध	दांत दिखाने वाला	- दंतिनपोर
भक्त	- भगत	तीन पुत्रों के बाद उत्पन्न पुत्री -	तिलरी
कागज	- कागद	चार माह या समूह	- चउमस
दमारम	- धमाधम	दो नालों का संगम	- दो मुहानी
नीम	- तीम	सांवाला जो सुन्दर है	- सियाम सुन्दर
पड़ोसी	- परोसी	निकम्मा	- कोडिहा, डेरिहा
अकेला	- अकेल्ला	उत्पत्ती	- हुरतीहा, उपदरो, हेजुबार
बादल	- बादर	कौचड़	- चिखला, सुदरी
पीड़ा	- पीरो	आगा पीछा करने वाला	- घुचपुचहा
जिंदगानी	- जिनगानी	लंबी जुलफों वाला	- झुलपहा
सुन्दर	- सुधर	चपरी नाक वाला	- छेपकहा
लंबा	- लमहा	निमंत्रण बांटने वाला	- नेवतहार
उज्ज्वल	- उज्जर	वधु के मापन द्वारा विवाह में पांच प्रकार	-
हरा	- हरियर	पंचहर का बर्तन	-
मोटा	- मोट, मोट्ट	कारी बिलाई, लमचोंची - अधिक करुण होना	-
ढीला	- डौलूण/दिल्लूण	कुल बिहाय करन्दर जोते -	सही कार्य में धोखा
अपरिचित	- बिन चिन्हार/अनचिन्हार		हानि नहीं

हिरण	-	कोटी/हिरण	भिंडी	-	रमकीया
गिलहरी	-	चिह्न/चिह्न	गुरई	-	डोड़का
लोमड़ी	-	खेवरी	अरबी	-	कोचई
चूहा	-	मुसुबा	निर्णय	-	फइसला
भैंस का बच्चा	-	पंजरू	मसलूम	-	पुट्ट
उल्लू	-	युधुवा	गंगारफली	-	चुरचुटिया
नीलकण्ठ पक्षी	-	देहा	बरबदी बीज	-	हुराण/हुरणा
मैना	-	सहलाई	तोता	-	सुवा/मिन्दू
गौरैया	-	बाहमन चिरई	मुर्गी का बच्चा	-	चिया
गर्दन	-	हेटवेचरोटा/टुआ	तीतर	-	तीतुर
ताली	-	पपुसी/पपौड़ी	कबूतर	-	परेवा
नाभि	-	बोरी/बोड़ी	गिरिगट	-	टेका
रखना	-	युटुआ	लिलचट्टा	-	मोछरी
तलुआ	-	तरपाव	मेहक	-	बेगाचा/मेचका
कतिपत्रा	-	चौनी अंगरी	झींगा	-	चिंगरी
कमर	-	कानिहा	कछुआ	-	लिमुआन
खरबूज	-	बंगाला/फूट			
गाना	-	कुसियार			
नींबू	-	लिम्बु/लिमठ			
प्याज	-	गोदली			



## किसान, श्रमिक और नारी

प्रेमचन्द के कहानियों के नायक

डॉ. पूलदास महांत

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष - हिन्दी

एक अरब इंसान 145 वर्ष बाद भी अपनी रचनाओं में जीवित है। 'कलम के सिपाही' मुंशी प्रेमचन्द।

जब मुंशी प्रेमचन्द जी की पत्नी शिवालयनी देवी ने उनसे पूछा - 'देश में क्रांति हुई तो वे किसका साथ देंगे?' इस पर मुंशी प्रेमचन्द का उत्तर था।

'मजदूरों और कारखानदारों का। मैं पहले ही सबसे कह दूंगा कि मैं तो मजदूर हूँ। तुम फावड़ा चलाते हो, मैं कलम चलाता हूँ, हम दोनों बराबर हैं।'

कथा सम्राट, उपन्यास सम्राट, कलम का जादूगर जैसे अनेक उपाधियों से विभूषित मुंशी प्रेमचन्द आधुनिक कहानी के पितामह कहे जाते हैं। उनके साहित्यिक जीवन का आरंभ 1901 से हो चुका था किन्तु उनकी पहली हिन्दी कहानी सस्वती पत्रिका के दिसम्बर अंक में 1915 में 'सौत' नाम से प्रकाशित हुई। उनके साहित्य में किसान के प्रति हमदर्दी, उनके यथार्थ जीवन को अपनी कलम से हूबहू उतार देना यह सब उनकी कलम की ताकत थी। मुंशी प्रेमचन्द का किसान के प्रति विंन देखाए - 'केले को काटना इतना आसान नहीं जितना किसान से बदला लेना। उसकी सारी कमाई खेतों में रहती है, या खलिहानों में।'

प्रेमचन्द के पहले हिन्दी में काल्पनिक, एथ्यारी और पौराणिक धार्मिक रचनाएँ ही की जाती थी, मुंशी प्रेमचन्द ने हिन्दी में यथार्थवाद की शुरुआत की। भारतीय साहित्य में बहुत सा विमर्श जो प्रमुखता से उभरा, चाहे वह किसान, श्रमिक, सर्वहारा, दलित साहित्य हो या नारी साहित्य उसकी जड़ें कहीं गहरे प्रेमचन्द के साहित्य में दिखाई देती हैं।

प्रेमचन्द जी किसान का श्रम, उसकी मेहनत आत्मनिर्भरता को साहित्य में उतारकर उसे कर्मशील नायक की उपाधि दी। कहा भी गया है -

'बाहूँ पूत पिता के धर्म, खेती बाहूँ अपने ही कर्म। कलम का सिपाही मुंशी प्रेमचन्द की कर्मशीलता की सच्चाई देखिए, वे कहते हैं- 'मैं एक मजदूर हूँ, जिस दिन कुछ लिख न लूँ, उस दिन मुझे रोटी खाने का कोई हक नहीं।'

सत्य का अनुसरण करने वाले और मानवता के कर्तृ समर्थक थे प्रेमचन्द। उनकी कहानियों में जनता, किसान, मजदूर और नारी का चित्रण नायक के रूप में हुआ है। मुंशी प्रेमचन्द राष्ट्रीयता, आदर्श एवं यथार्थ जीवन के पक्षधर थे।

'पूस की रात' कहानी में कहानी का मुख्य पात्र किसान 'हल्कू' मजदूरी से एक-एक पैसा बचाकर तीन रूपये कब्बल खरीदने के लिए जमा किये थे उसे भी सहना नाम के साहू को तकारे पर लौटाना पड़ा था। 'पूस की टिडुली रात' में किसान कैसे अपना खेत बचाकर रखते हैं या खुद को पूस की अंधेरी रात, आकाश पर तारे टिडुली हुए मारूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊबल के पत्रों की एक छतरी के नीचे बाँस के खदोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चारद ओढ़े कांप रहा था।

कहानीकार प्रेमचन्द ने पूस की रात एक गरीब किसान के लिए किस तरह बीतता है उसका बड़े ही स्थापतिकता से चित्रण किया है।

'ठाकुर का कुँआ' कहानी में प्रेमचन्द ने समाज में फले विकृति, उच्च वर्ग और निम्न वर्ग साम्प्रदायिकता के जहर का उजागर किया है। ठाकुर के कुँए से पानी लाने की हिम्मत निम्न वर्ग में नहीं है। रात-दिन पानी पर पहरा कहानी का पात्र 'जोबू' है जो गरीब, श्रमिक वर्ग का है, अस्वस्थ है। ऐसे समय में स्त्री में इतना साहस नहीं कि वह अपने पति के लिए ठाकुर के कुँए से पानी ला सके। कहानी में प्रेमचन्द की यथार्थ की बानगी दीखिए - ठाकुर के कुँए पर कौन चढ़ने देगा। दूर से लोहा डॉट भगायेंगे। साहू का कुँआ गाँव के इस सिरे पर है, परन्तु वहाँ भी कौन पानी भरने देगा? कोई कुँआ गाँव में है नहीं। हाथ-पाँव तुड़वा आयेगी और कुछ न होगा, बैठ चुपके से। ब्राह्मण-देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहू जो एक के पाँव लेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है। हम तो मर भी जाते हैं तो कोई दुआर पर झँकने तक नहीं आता। कन्या देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोहा कुँए से पानी भरने देंगे।

'मन्न' कहानी में ऊँच-नीच, सुविधा भोगी और लाचार व्यक्ति के जीवन का यथार्थ, भेदभाव का चित्रण मार्मिक बन पड़ा है। कहानी में एक बूढ़ा, ग्रामीण, गरीब अपने छः बेटों में से पाँच को गाँवा बैठा है, अंतिम पुत्र जिन्दगी और मौत से लड़ रहा है। बूढ़ा, डॉ चट्टा से अपने पुत्र को बचाने की गुहार लगाता है किन्तु डॉक्टर का समय 'गोबर्न' खेलने जाने का हो गया है। वह उसके पुत्र को देखने से इंकार कर देता है। बूढ़ा, डॉक्टर के कदमों में अपनी पाड़ी रख देता है, तब भी डॉक्टर सुनता नहीं। उसका बेटा शांत हो जाता है। कुछ सालों बाद डॉक्टर पुत्र सर्पदंश के कारण मरणसन्न अवस्था में है। जैसे ही बूढ़े को पता चलता है वह अपने आप को रोक नहीं पाता। वह ऐसी तेज गति से चलता है मानो मौत उसका पीछा कर रही हो। डॉक्टर पुत्र को देख कर वह मंत्रोच्चारण करने लगता है। बूढ़े को मंत्रोच्चारण से डॉक्टर का पुत्र सामान्य होने लगता है। जैसे ही सामान्य होकर वह आँख खोलता है बूढ़ा अपने कर्तव्य पालन के परचात तुरंत घर पहुँच जाता है। यहाँ कहानीकार ने एक डॉक्टर और दूसरी ओर एक बूढ़ा गरीब व्यक्ति के कर्तव्य पालन का यथार्थ बोध कारक आमजन को सत्य से साक्षात्कार करा देता है।

भारतीय नारी के संबंध में प्रेमचन्द की दृष्टि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते स्मते तत्र देवता' की धारणा की विरोधी

कदापि न थी। किन्तु इसके पीछे छिपी संकीर्णता में वे सिमटें नहीं थीं। जीवन के यथार्थ एवं सम्कालीन रूढ़ियों, परम्पराओं में जकड़ी नारी के प्रति उनकी संवेदनशील देशकाल के अनुरूप और प्रायः उनकी सीमाओं से परे निकलकर बहुत कुछ ऐसा देती रहीं हैं जो अनुसंधान चिंतन को भी चौंकाने में समर्थ हैं। प्रेमचन्द यमेल विवाह के विरोधी थे इसका यथार्थ चित्रण उनकी दो कहानियाँ 'नरक का मार्ग', और 'नया विवाह' में देखने को मिलता है।

सुरीला जो एक सुन्दर, सुरशील और सुधड़ युवती है उसका विवाह एक वृद्ध व्यक्ति से हो जाता है। वैवाहिक सुख की प्राप्ति न होने के कारण पति की मृत्यु के बाद सच्चे प्रेम की तलाश में वह घर छोड़कर निकल पड़ती है, किन्तु पाप की गर्त में जा गिरती है। वह अपनी दुर्दशा के लिए अपने पति और पिता को जिम्मेदार ठहराते हुए अपना दुख व्यक्त करती हुयी कहती है - 'कभी-कभी मुझे न्याय पर दया आती है। यह नहीं समझते कि नारी जीवन में कोई ऐसी वस्तु भी है जिसे खोकर उसकी आँखों में स्वर्ग भी नरक तुल्य हो जाता है।'

कहानी 'नया विवाह' की आशा अपने से काफी बड़ी उम्र के पति को पाकर खुश नहीं हैं। वह अपने धर्म को निभाना जानती है किन्तु यौवन की उदराम आकांक्षाएँ उसे घर के नौकर के प्रति आकर्षित कर देती हैं। जब 'जुगल', 'आशा' के रूप सौन्दर्य की प्रशंसा करता है तो उसका मन उमंग में भर उठता है। वह सोचती है - 'लाला डंगामल ने असंख्य बार आशा में रूप और यौवन की प्रशंसा की थी, मगर उनकी प्रशंसा में उसे बनावट की गंध आती थी। वह शब्द उनके मुख से निकलकर ऐसे लगते थे जैसे कोई पंगु दौड़ने की चेष्टा कर रहा हो। जुगल के इन सीधे शब्दों में एक उन्माद था, एक चोट थी। आशा की सारी देह प्रकाशित हो गयी।'

'सौत' कहानी में लेखक ने गोलवरी के रूप में एक ऐसे चरित्र की उद्भावना की है जा प्रेम, त्याग, बलिदान के साथ-साथ स्त्री सुलभ ईर्ष्या से भी भरी हुई है। औलाद की चाह में वह अपने पति का दूसरा विवाह कराकर सबकी नजरों में त्याग की मूर्ति तो बन जाती है किन्तु सौतन के घर आने पर द्वेष व ईर्ष्या के भाव भी हृदय में जगाने लगते हैं, वह अपनी सौत गोमती और पति पाण्डित देवदल पर स्वार्थ और निष्ठुरता का दोषारोपण करने लगती है।

'सोहाग का शव' कहानी की नायिका 'सुभद्रा' भी अपने पति द्वारा धोखा दिये जाने पर रोती गिड़गिड़ाती नहीं अपितु अपने स्वतंत्र अस्तित्व की घोषणा करती है। जब उसे पता चलता है कि लन्दन जाकर 'केरोल' किसी अन्य लड़की से विवाह कर रहा है तो वह उसका विरोध नहीं करती अपितु उस परिस्थिति में भी स्त्रीजन्य सारी दुर्बलाओं पर विजय प्राप्त करती है। वह कहती है 'क्या पुरूष हो जाने से सारी बातें क्षम्य और स्त्री हो जाने से सभी बातें अक्षम्य हो जाती हैं।'

'माला का हृदय' कहानी में माधवी अपने इकलौते पुत्र की मृत्यु का बदला लेने के लिए उसकी मृत्यु के लिए जिम्मेदार पुलिस अफसर के घर काम करने लगती है किन्तु उसके छोटे से बालक के मोह में इतनी वशीभूत हो जाती है कि अपना बदला भूल उस पर अपनी ममता लूटाने लगती है और उसकी मृत्यु पर फूट-फूट कर रोने

लंगती है। प्रेम चन्द जी के शब्दों में- 'माला का हरय दया का आगार है। उसे जलाओ तो उसमें दया की ही गंध निकलती है, पीसो तो दया का ही रस निकलता है। विधाला की फूल लीलाएं भी उस स्वच्छ निर्मल-स्वोत को मलिन नहीं कर सकती।

'स्वामिनी' कहानी की नायिका रामप्यारी भी अपने पति की मृत्यु के बाद टूटती नहीं बिखरती नहीं अस्तित्व सारे घर का दायित्व अपने कंधों पर लेकर अपना सब कुछ परिवार पर समर्पित कर देती है। प्रेमचन्द ने अपने कई कहानियों में नारी का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। वे नारी के अंदर सेवा, त्याग, सम्पन्न, बलिदान, प्रतिशीलता, कर्तव्यबोध, शान और पवित्रता आदि उदार भावों को रेखाचित्र चित्रित हैं। प्रेमचन्द जी कहते हैं- 'जब पुरुष में नारी के गुण आ जाते हैं तो वे महात्मा बन जाता है और अगर नारी में पुरुष के गुण आ जाये तो वे कुलटा बन जाती है।'

प्रेमचन्द ने 300 कहानियाँ लिखीं उनमें कफन, पूस की रात, पंच परमेश्वर, इंद्रगाह, नमक का दरोगा, ठाकुर का कुँआ, बड़े घर की बेटी, सवा सेर गेहूँ, विखंड, शतरंज के खिलाड़ी, मंत्र बूढ़ी काकी, दो बैलों की कथा, गुलती डंडा, आलमाराम, इज्जत का खून, इस्तीफा, कप्तान साहब, कर्मों का फल, क्रिकेट मैच, कवच, काकिल, घमंड का पुतला, ज्योति जेल, जुलूस, झांकी, त्रिधाचरित्र, बड़ेबाबू आदि प्रमुख हैं।

'कफन' कहानी प्रेमचंद जी की अंतिम कहानी। कहानी एक ऐसे सर्वहारा वर्ग का चित्रण करती है जिसमें धीमू और माधव बेसेहारा, लाचार, लापरवाह और गरीबी का जीवन जीते हैं, काम-धाम कुछ करते नहीं। दोनों का साहचर्य उन्हें जीने की कला सिखाता है। घर में पुत्रवधु 'बुधिया' प्रसव पीड़ा से व्याकुल एक बंद कोठी में कपड़ रही है। कहानी में कहानीकार मुंशी प्रेमचंद ने नारी की पीड़ा, उसकी बेबसी का प्रकटीकरण तो दूसरी और गौर जावहरदेही पुरुष का काला चिट्ठा खोल कर रख दिया है। पीड़िता की मृत्यु हो जाती है। अब दाह संस्कार के लिए जमींदार उनकी सहायता करता है किन्तु हाथ में धन आ जाने के कारण अपने कर्तव्य बोध से ऊपर उठकर अच्छा भोजन की लालसा लिये, किसी भी भोजनालय में जाकर अच्छा भोजन करते हैं, और नशा भी करते हैं। किसी को भोजन दान कर खुश भी होते हैं और कहते हैं 'दने का सुख क्या होता है ये आज जाना और नशे में दोनों गाते हैं 'तंगिनी क्या नैगा झमकावे'

प्रेमचंद कालजयी रचनाकार हैं, मानवतावाद के सजग प्रहरी हैं। उनके नाम से हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद युग चलना बहुत बड़ी बात है। वे मानते हैं 'अन्याय होने पर चुप रहना अन्याय के ही समान है।' आज भी उनकी कहानियों में किसान, श्रमिक और नारी कहानी को नायक है।

**जीत लो हट लवहा, बीत जाने से पहले,  
लौट कर याद आती हैं वक्त नही।**



**पर्यावरण के साथ बंधा है जीवत का डोर**

चित्ररेखा श्रीवास

सहायक प्राध्यापक - राजनीति विज्ञान

सजीवों को जीवित रहने के लिये हवा पानी और भोजन मूलभूत आवश्यकता है। ये तीनों हमें प्रकृति से प्राप्त होती है यही कारण है कि भारतीय समाज प्रकृति पूजक रहा है उसने नरार, मौसल जैसे ज्यार अक्सिजन देने वाले वृक्षों में देवों की कल्पना की और इन वृक्षों की कटाई को निषेध बताया। नदियों को देवी का दर्जा दिया और उनके संरक्षण का महत्त्व बताया। धरती को माँ मानकर जन्मभूमि को स्वर्ग से भी ऊँचा बताया।

“जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी”

- बालमीकि रामायण

अर्थात् माँ और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है। इस तरह से प्राचीन भारतीय समाज प्रकृति पूजक मनकर प्रकृति के साहचर्य में अपना सुखद जीवन बिता रहा था। धीरे धीरे मानव ने विकास किया। इस बीच कई वैज्ञानिक आविष्कार हुये, अब जीवन ज्यादा आसान हो गया। मनुष्य की इच्छाओं को पंख लगाये जाँद में जाकर भी मनुष्य नहीं रुका, अब उसने प्रकृति को रौंदना पुरु किया प्रकृति क सहचर मनुष्य खुद को प्रकृति का स्वामी समझने लगा। विकास के नाम पर हजारों वर्ग किलोमीटर के जंगल काट डाले,कलकार खानों का गदा पानी नदियों में डाला जाने लगा, धरती पर प्लास्टिक,कोच के ढेर लगा दिये। भूजल का भरपूर दोहन मनुष्यों ने किया,खेती की जमीन कारखानों ने निगल ली। इस तरह धीरे धीरे पर्यावरण का क्षरता होने लगा और पर्यावरण प्रदुशण का विकाराल रूप मानव सभ्यता के समाने आया। पर्यावरण प्रदुशण का दुष्परिणाम जलवायु परिवर्तन है। वर्तमान समय में बेमौसम बरसान, टंड के दिनों में पर्यावरण टंड ना पड़ना, बारिश ना होना, जलवायु परिवर्तन के उदाहरण है। जंगलों के लगातार काटे जाने के कारण वन्य जीवों का जीवन दूधर हुआ है। यही कारण है कि हाथी जैसे वन्यजीव बसाहटों में पहुँच कर उसे उकसाने पहुँचा रहे हैं।

विश्व में रेगिस्तान का दायरा बढ़ रहा है। आधी से अधिक आबादी को स्वच्छ पेयजल नहीं मिल पा रहा है, भू-जल के स्त्रोत चेनई जैसे शहर में सूख चुके हैं। ये समस्त विपदा ये मनुष्यों के कारण आयी है। मनुष्यों ने पर्यावरण का संतुलन बिगाड़ दिया है। पर्यावरण को बचाने के लिये पर्यावरण का संरक्षण आवश्यक है। इसके लिये जरूरी है कि हम अपने जल स्त्रोतों को बचाये, भूजल को रिचार्ज करें। इससे स्वच्छ पेय जल की उपलब्धता बढ़ेगी। पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिये सबसे ज्यादा जरूरी है पेड़ लगाना, पेड़ लगाने से वायु शुद्ध होगा यह प्रक्रिया मन से हो हर व्यक्ति यह ठान ले कि उसे अपने जीवन में एक पेड़ लगाना अनिवार्य है। वृक्षारोपण की रम्य अवस्था ना हो। हर साल 5 जून को पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। पर्यावरण संरक्षण पर गाँधी,कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, पर्यावरण संरक्षण के शपथ भी लिये जाते हैं परंतु पर्यावरण प्रदूषण साल दर साल बढ़ते जा रहा है तो इस तरह के आयोजन केवल रस्मी रह जाते हैं। इसी प्रकार हर वर्ष वृक्षारोपण का

महाविद्यालयीन वार्षिक परीक्षा

आयोजन भी किया जाता है। परंतु आगले साल के लिये लगाये गये पौधे नष्ट हो चुके होते हैं। इस प्रकार वृक्षारोपण भी महज दिखावा बन कर रह जाता है। पर्यावरण संरक्षण के लिये दृढ़ इच्छा शक्ति आवश्यक है इसके लिये सतत् प्रयास जरूरी है, पर्यावरण के साथ हमारे जीवन का डोर बंधा है इस लिये पर्यावरण को संवर्धित, संरक्षित करना हमारे नैतिक जिम्मेदारी है।

--00--

## भारत में कृषि पर्यटन संभावना एवं चुनौती

अरुण कुमार पाटिल

बी.एससी, द्वितीय सेमेस्टर (बायो)

एगो टूरिज्म या कृषि पर्यटन एक ऐसा पर्यटन क्षेत्र है, जिसमें पर्यटक गांवों में जाकर किसानों की दिनचर्या, कृषि कार्यों और ग्रामीण जीवन का अनुभव करते हैं। यह न केवल पर्यटकों को एक अनूठा अनुभव प्रदान करता है, बल्कि किसानों को भी अतिरिक्त आय का स्रोत देता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में एगो टूरिज्म की अपार संभावना है।

“जहां मिट्टी की खुशबू हो,  
वही असली भारत बसता है

और एगो टूरिज्म उस भारत से मिलने वाला पुल है”

एगो टूरिज्म की संभावनाएँ

- कृषि प्रधान देश**
- भारत की लगभग 60: आबादी अपनी खास कृषि पद्धति और ग्रामीण संस्कृति है। यह विविधता एगो टूरिज्म के लिए एक मजबूत नींव प्रदान करती है।
- ग्रामीण अनुभव की मांग** - शहरीकरण के चलते अब शहरों में रहने वाले लोग शांति और प्रकृति की तलाश में रहते हैं। खेतों में काम करना, बैलगाड़ी की सवारी, लोकनृत्य और परम्परागत भोजन उन्हें आकर्षित करता है।

“किसानों के खेत केवल अनाज नहीं उगाते, वे संस्कृति, परम्परा व आत्मनिर्भरता की फसल भी उगाते हैं। एगो टूरिज्म इसी फसल को दुनिया तक पहुंचाने का माध्यम है।”

- सेवागार के अवसर** - यह ग्रामीण मॉडल युवाओं को स्थानीय गाइड, खानपान सेवा, आवास व्यवस्था आदि।

**स्थानीय उत्पादों का प्रचार** - एगो टूरिज्म स्थानीय हस्तशिल्प जैविक उत्पाद और पारंपरिक खान पान की बाजार से जोड़ने का मौका देता है।

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकनी (छ.ग.)

महाविद्यालयीन वार्षिक परीक्षा

पर्यावरण स्थिरता - यह पर्यटन का एक टिकाऊ रूप है, क्योंकि इसमें बड़े पैमाने पर निर्माण की आवश्यकता नहीं होती।

भारत में एगो टूरिज्म के कुछ प्रमुख उदाहरण -

- जामुनगी (महाराष्ट्र) - यहाँ पर्यटक खेती, दुग्ध उत्पादन ग्रामीण जीवनशैली का प्रत्यक्ष अनुभव ले सकते हैं।

**पंजाब** - सरसों के खेत, पारंपरिक पंजाबी संस्कृति और भोजन विदेशी पर्यटकों को खास तौर पर आकर्षित करते हैं।

उत्तराखण्ड व हिमाचल - फल उत्पादन, जैविक खेती और प्राकृतिक सौंदर्य यहाँ के मुख्य आकर्षक हैं।

**छत्तीसगढ़ में एगो टूरिज्म का उदाहरण** -

- इन क्षेत्रों में पारंपरिक कृषि, वर्षा जीवन शैली देखने योग्य होती है। विशेष रूप में कोण्डागांव व दतेवाड़ा के कुछ समुदायों में जैविक खेती और कुटीर उद्योग को पर्यटन से जोड़ा है। पर्यटक यहाँ आकर धान की रोपड़, महुआ संग्रहण और गोठान जैसे ग्रामीण जीवन के अनुभव करते हैं।

“हमर माटी म सुगंधर सुवास हवय,  
आशे मन ला देख के ओ घल्लो गदगद हो जायें।

कृषि पर्यटन म हमर गांव के महक सवो झन तक पहुँचये।”

हाल ही में छ.ग. सरकार ने भी रामवन गामन पथ और टूरिज्म सर्किट डेवलपमेंट जैसे योजनाओं के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देना शुरू किया।

एगो टूरिज्म की चुनौतियाँ

- सुविधाओं की कमी**
- ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी बुनियादी सुविधाओं जैसे सड़क, बिजली, शौचालय आदि की कमी है।
- प्रशिक्षण की आवश्यकता** - ग्रामीणों को गाइडिंग और पर्यटक सेवा से जुड़े प्रशिक्षण की आवश्यकता है।
- निवेश की कमी** - शुरूआत में पूंजी निवेश की जरूरत होती है जो कई बार ग्रामीणों के लिए कठिन होता है।

समाधान और सुझाव

- सरकारी समर्थन**
- सरकार को एगो टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए योजनाएँ व सविस्ती प्रदान करनी चाहिए।
- दिविजल प्लेटफॉर्म**
- वेबसाइट और ऐप्स के जरिए जानकारी पहुँचाना उपयोगी होगा।
- शिक्षा और जागरूकता**
- किसानों को यह समझना आवश्यक है कि यह आय का नया रास्ता बन सकता है।

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकनी (छ.ग.)

निष्कर्ष

- धारण करने के लिए प्रयास देश के लिए दूरिभूत केवल एक वैयक्तिक आय का स्थान नहीं है बल्कि एक सांस्कृतिक और आर्थिक संतु है जो गांवों को राहत से जोड़ता है। यह किसानों को आत्मनिर्भर बनाता है, युवाओं को रोजगार देता है, और नदियों को मिट्टी को सुरक्षित, महानगर को निवास व जीवन को सादगी से जोड़ता है।

'नए सिनेमों एक स्थान नहीं, एक भावना है,

और कृषि पर्यटन उस भावना को जीने का अवसर देती है।'

--00--

### Finding your passion : Pursuing your dreams with purpose

Akash Kumar Patel

Assistant Professor - English



The most important thing for finding passion involves self reflection, identify your interests what activities, topics or subjects genuinely sparks your curiosity and enthusiasm? then reflect on your strengths what are you naturally good at? Explore in activities, hobbies, or volunteer opportunities that pique your interest. Seek feedback : ask trusted friends, family or members for their perspective on your strengths and areas of growth. Pursuing your dreams will inevitably involve challenges and setbacks. View them as opportunities for learning and growth and most important thing don't give up easily. Stay focused on your goals and continue to work towards them. Acknowledge and celebrate your even small accomplishments ... Believe in your ability to achieve your goals and trust will work out.

"Follow your passion, best prepared to Work hard and Sacrifice and above all, don't let anyone limit your dreams".

जब भी आप एक अच्छी किताब पढ़ते हैं, तो कही न कही दुनिया में आपके लिए रोशनी का एक नया दरवाजा खुलता है।

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सक्की (छा.)

### स्वास्थ्य

अनन्य सिंह  
कोडोपिकाते



कार्यकुशलता शारीरिक क्षमता उत्पादकता एवं स्वास्थ्य परस्पर अंतःसंबंधित है। राष्ट्रीय विकास के लिये यह आवश्यक है कि राष्ट्र के सदस्यों का स्वास्थ्य स्तर उन्नत हो। एक स्वस्थ समुदाय उस अधिसंरचना को प्रदान करता है जिसके आधार पर आर्थिक रूप से समर्थ समाज का निर्माण किया जा सकता है। स्वास्थ्य मनुष्य को सर्वाधिक महत्वपूर्ण पूंजी है जिसके आधार पर मानवोद्य सुख को नाँव पड़ती है। स्वास्थ्य को अवधारणा सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही प्रकार से समझा जाता है। नकारात्मक रूप से यह कहा जा सकता है कि योग का न होना ही स्वास्थ्य है। वहीं व्यक्ति स्वस्थ है जो बीमार नहीं पड़ता या जिसमें योग के लक्षण नहीं दिखते पड़ते। स्वास्थ्य के आधुनिक अवधारणाओं के अनुसार स्वास्थ्य का तात्पर्य मानसिक, शारीरिक, पारिवारिक एवं परिवेश जनिट समृद्ध और स्वास्थ्य स्थिति से लगाया जा सकता है। योग और कर्म से मुक्त रहना ही स्वास्थ्य सूचक है। स्वस्थ मनुष्य परिवार, समाज व राष्ट्र का निर्माण करता है तथा आर्थिक उन्नति व विकास में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करता है। स्वास्थ्य वह है जिसमें व्यक्ति मानसिक, शारीरिक तथा वातावरण संबंधी नैतिक व प्राकृतिक आधार पर जीवन जीता है। जीवन जीने का आधार स्वस्थ वायु ही स्वच्छ जल, सूर्य का प्रकाश, सुगुलित भोजन नियमित व्यायाम तनाव रहित वातावरण, संपूर्ण निद्रा तथा शारीरिक स्वच्छता से संबंध रखता है।

### छत्तीसगढ़ी के

चरलहिया  
(संकलित)



आयुष्य सूर्यवंशी  
बीएस-सी द्वितीय वर्ष

कतको करही बेरभलाही। काको गरव नइ रहि पाही। रावन जइसे कतको आइन, ज्यादा तपही ते खप जाही।	वे बरही एक दिन बुलाही। वे ऊही खचित बूढ़ जाही। सुधर जो लै, आही बेरा - कोढो हर सांस के सिराही।
सुधर वो जिनगानी गढ़ही। सरला आयु कोढो बहही। ओकर बढ़ावरी हो जाही, जोहा हर दिन पोथा पढ़ही।	वे चाही सिरतो वो पाही। जउन सोचही वो हो जाही। कर लेही कहु बरौ सुन लौ, मनखे दू हाथ जब बढ़ाही।

- डॉ. देवधर महंत (विभाजन) की छत्तीसगढ़ी काव्य से संकलित

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सक्की (छा.)

महाविद्यालयीन वार्षिक परीक्षा

लक्ष्य



कृष्ण कुमार  
बी.एस.सी. (बायो) तृतीय वर्ष

## पदार्थ से ब्रह्माण्ड की समझना

हम, हमारे आसपास के जीव जंतु, निर्जीव, ग्रह, तारा, गैलेक्सी बोले तो पूरे ब्रह्माण्ड सभी पदार्थ से बनी है। ब्रह्माण्ड में अदृश्य पदार्थ भी है जिसे डार्क मैटर कहते हैं जिसके कारण ब्रह्माण्ड फैल रहा है, इस ब्रह्माण्ड के पृथ्वी में जीव का संभव होना पदार्थ से ही हुआ है। आज हमारे जीवन भी सामग्री होते हैं जैसे खाने का सामान, मोबाइल, टीवी, गाड़ी यातायात रोड, कपड़े, पुस्तक, कॉपी समुद्र, जहाज, राकेट आदि दुनिया के किसी भी चीज को देख लो सभी चीजें पदार्थ से ही बने होते हैं, यहाँ तक की मानव भी पदार्थ से बने होते हैं, हर जीव जंतु के सूक्ष्म से सूक्ष्म अंग भी पदार्थ से बने होते हैं, ऐसा माना जाता है कि जब एक कोशिकीय जीव से जब पृथ्वी में जीवन का शुरुआत हुआ तब कुछ पदार्थ के केमिकल रिएक्शन से समुद्र के अंदर ज्वालामुखी के उपस्थिति में केमिकल क्रियाओं से हुआ, इस पदार्थ को दो भागों में बांटा जा सकता है तत्व तथा यौगिक में दो या दो से अधिक अलग-अलग तत्वों से यौगिक बनते हैं, यह पदार्थ तोस, ताल या गैस के रूप में हो सकते हैं, इस तत्व को तोड़ने जायें तो अणु, परमाणु, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन, क्वार्क, हींग बोसॉन होते है यह सभी बातें शोधकर्ता वैज्ञानिकों द्वारा पता चला इससे भी और छोटे पार्टिकल हो सकते हैं ।

--00--

## सायन सोमवाह की शिवभक्ति की कहानी



सीता केंवट  
बी.ए. द्वितीय वर्ष

प्राचीन काल में एक सेठ और सेठानी रहते थे। उनके पास कोई अन्य धन की कमी नहीं थी। जीवन में वह लोग कभी दान, दक्षिणा कोई धर्म पुर्न के कार्य नहीं किया और उनके खाने वाले कोई थे और उनकी कोई सेठान भी नहीं था। जिस जगह पर उस सेठ की हवेली उसी पास में एक पीपल की वृक्ष में एक घोसला एक सुरर सी चिड़िया रहती थी उनके दो छोटे-छोटे बच्चे थे । यह रोज नगर में दाना, पानी चुभने के बाद आपस अपने घोसलें में आती और उस सेठा को छिल्लाती चिड़िया रोज उसे सेठ के घर भी जाया करती थी लेकिन वहाँ पर एक उसको दाना नहीं मिला करती थी। चिड़िया अपने मन यह सोचने लगती है। सबसे बड़ी हवेली इसी सेठ की है वह धनी व्यक्ति है लेकिन वह किसी को दान नहीं देता और कभी किसी को भिक्षुक भिक्षा नहीं डालता । कभी

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी (छ.ग.)

[24]

महाविद्यालयीन वार्षिक परीक्षा

लक्ष्य

कोई धर्म का कार्य नहीं करता । कभी असहाय व्यक्ति को सहायता नहीं करता और कभी जीव-जंतु की सहायता नहीं करता, न ही पशियों को दाना डालता। यह सेठ तो कंजूस है। एक चिड़िया सुबह वक्त अपने घोसले से उड़कर उस सेठ के हवेली पर जा बैठती है। जब चिड़िया सेठ के हवेली पर जा कर बैठती है तब सेठ-सेठानी बात कर रहे थे। सेठ जी हमारे पास इतना धन दौलत पूरे संपत्ति है कि पूरे नगर वाले पास कोई धन की नहीं था इतना धनी नगर के सेठ के पास था और हमारे पास धन की कोई कमी नहीं है लेकिन इस धन का क्या करें। हमारा कोई वारिस नहीं है, कोई पुत्र नहीं है, इस धन को खाने वाला कोई नहीं। कौन खायेगा तब सेठ अपने सेठानी से कहता है। हमारा नसीब में पुत्र प्राप्ति नहीं है। सेठ कहता है अब इस धन की प्राप्ति नहीं है। सेठ कहता अब जब तक जीयें तब तक इस धन को खा लेंगे। उसके बाद जिसके नसीब होगा इस संपत्ति को खायेगा। दोनों पति-पत्नि इस तरह की बातें करता है। वह चिड़िया बड़े गौर से सुनने लगती है। यह सेठ और सेठानी की पूरी बात सुनने के बाद आगे चली जाती है। अब चिड़िया रोज उस सेठ के घर जाने लगी पूरी बात सुनने लगी सेठ जाकर सेठानी से बात कर रहे तभी चिड़िया सुन रहे और वह चिड़िया सेठानी को बड़े अच्छे स्वभाव की थी। उसके दिल में दया धर्म था जब सेठानी उसके घोसले के पास जाती है तो सेठानी को चिड़िया से लगाव भी होने लगा। सेठानी सेठ से खुप-खुप के दाने डाला करती है कि सेठानी बहुत अच्छी है वह मुझे दाने खिलाती है कि सेठानी बहुत अच्छी है। लेकिन उसके घर में एक पुत्र नहीं और एक औरत जब तक मां नहीं बनती तब तक औरत होना बेकार होता है। एक औरत को दुःख दर्द एक औरत ही समझ सकती है। औरत का जीवन सफल जब होता है तब वह मां बन जाती है। और चिड़िया सोचने लगती है कि ऐसा में क्या करूँ जो इसके घर में पुत्र जन्म ले और उनका पुत्र की प्राप्ति हो कि मैं एक दिन चिड़िया के मन में क्या न मैं देवों के देव महादेव पास जाऊँ इस सेठ सेठानी के लिए अर्जा करूँ यही सोचकर चिड़िया अपने पति से कहती है सुनिष् जो कुछ दिनों के लिए कहीं दूर जा रही हूँ। आप बच्चों का ख्याल रखना समय दोनों पानी खिलाना इतना कहकर चिड़िया अपने घोसले से उड़ती हुई जाती है। रात दिन परिश्रम करती है भूखी प्यासी उड़ती रहती है और उड़ते उड़ते अंत में वह कैलाश पर्वत पर पहुँच जाती है तब जहाँ महादेव और माता पार्वती है। तब जहाँ महादेव और माता पार्वती की चरणों में पड़ जाती है। वह बेहोश हो जाती है। माता पार्वती चिड़िया को अपने हाथों में उठाती है। चिड़िया से कहती है तुम चिड़िया कहाँ से आई हो। हे पुत्री बड़ी प्रशान दिख रही हो। तब चिड़िया माता पार्वती से कहती है कि मैं यहाँ से बहुत दुःखी हूँ और बड़ी दूर से आई हूँ और मेरा अपने दुःख के लिए दुःख नहीं हूँ किसी और के दुःख के लिए बड़ी दुखी तब मां पार्वती कहती है कि पुत्री आप मुझसे स्पष्ट बताइए। बात क्या है तब चिड़िया कहती है। मैं यहाँ जहाँ मैं रहती वहाँ एक सेठ सेठानी रहती है। उसका कोई पुत्र नहीं है। वह सेठानी जो बहुत भोली है चिड़िया इतनी बात मां पार्वती से कहती है फिर से बिहोस हो जाती है। मां पार्वती फिर से होश में लाती है फिर काफ़ी देर में होश में आती है। तब मां पार्वती उस चिड़िया को दाना पानी खिलाती है तब उस चिड़िया को कहती है कि पुत्री तुम चिन्ता न करो। थोड़ी देर महादेव उठेगा तब महादेव से बात करेंगे। फिर

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी (छ.ग.)

[25]

थोड़ी देर बाद महारदेव अपने समाधि से उठे माता पार्वती चिड़िया को हाथ में उठाकर महारदेव के पास जाती है और कहती है कि प्रभु माधव नगर में और एक सेठ और सेठानी रहते हैं। क्या उनके नसीब में एक पुत्र है कि नहीं तब महारदेव ध्यान लगाकर देखते पार्वती उनके नसीब कोई पुत्र नहीं है तब मां पार्वती कहती है क प्रभु उसके नसीब कोई पुत्र नहीं तब उन्हें देना पड़ना लेकिन महारदेव कहते हैं कि पार्वती जिन कयों करती हो उनके नसीब में कोई पुत्र नहीं है तो मैं उसको पुत्र दे सकता हूं। मां पार्वती कहती की यह अशा कर आई है हम इसके सहायता करेंगे। यह भूखी प्यासी उड़ती इतनी दूर से आई हम इसे खाती हाथ नहीं भोज सकते अब पार्वती की इतनी बात सुनने के बाद कहते हैं ठीक ठीक पार्वती हर बाद जिन है गुस्सारा हर बात पूरा करना भी पड़ता है। ठीक है तुम कह रही है तो उस सेठ-सेठानी को एक पुत्र दे देंगे लेकिन वो चिड़िया से कहते कि सेठ-सेठानी कोई दान, धर्म, पुण्य का काम नहीं करते हैं न कोई पवित्र शास्त्र नहीं पढ़ता पुण्य नहीं पढ़ता। कोई जान धर्म नहीं करता। वह नास्तिक लोग है लेकिन वह पुत्र प्रादि के बाद नास्तिक से आस्तिक तो होना पड़ेगा। उसको दान धर्म, ईश्वर की भजन भी करना पड़ेगा और मोरि जान होगा। चिड़िया बोलती है मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूंगी। तब चिड़िया प्रणाम करके वहां से उड़ती हुई अपने घोसले में आ जाती है। उसके नौ महीने बाद सेठ सेठान बहुत खुश होते हैं। चिड़िया की मोहनत सफल होती है। चिड़िया सोचने लगती है। इस नगर के सबसे बड़े धनी व्यक्ति है तब अपने पुत्र को अच्छे-अच्छे पकवान फल, चीजें खिलायेंगे। थोड़ा बहुत टुकड़ा नीचे गिरेंगे वहां हमको खाने को मिलेगा। धीरे-धीरे सेठ का लड़का बड़ा हो जाता है। एक श्रावण मास की निकल जाती है तब चिड़िया बहुत चिलित होती है। तब चिड़िया सोचने लगती है कि सेठ का पुत्र पांच साल हो चुका है और यह सेठ-सेठानी अभी तक कोई दान, दक्षिणा नहीं करते हैं, कोई मंदिर में नहीं जाते किसी की भिक्षा भी नहीं देते। कोई भी पुण्य का यह दोनो पति-पति कुछ नहीं करते। चिड़िया सोचने लगती है कोई दान दक्षिणा शुरू नहीं किया तो इसके पुत्र की मृत्यु जल्दी ही हो जायेगी। चिड़िया सोचने लगती है सेठ-सेठानी को कहू तो कैसे कहूं। मेरी बातों इशारों को नहीं समझ पायेगा। यह सोच कर चिड़िया बहुत ही दुख हो जाता है। चिड़िया के बच्चे बड़े हो चुके रहते है। चिड़िया अपने बच्चों को कहती है अपना छयाल करना। तब चिड़िया उड़ती हुई फिर से कैलाश पर्वत पहुँच जाती है मां पार्वती कहती है कि चिड़िया पुत्री अब क्या परेशानी है। सेठ-सेठानी को पुत्र तो मिल गया लेकिन सत्य मांग में लाना में अक्षम रही है मैं उसको नास्तिक से आस्तिक नहीं बना पाई। उनसे धर्म का कार्य नहीं करवा पाई नहीं कोई मंदिर जाते तब महारदेव कहते हैं तब अल्पयुव होगा। चिड़िया पार्वती की गोर में पड़ जाती है तब सिर चुका कहती है। मईया ऐसा नहीं होना चाहिए दिलपायु होना चाहिए अल्पयुव नहीं इस बात को अच्छी जानती थी। मईया के चरणों से पड़ जावे और मईया को रात्री कर लेते है। तुम चुपचाप हो जाओ। सेठ सेठानी चिड़िया से कहती है हम बहुत जल्द ही हवेली जायेंगे। फिर से चिड़िया उड़ के घोसला में चली जाती है। कुछ दिन बाद महारदेव पार्वती द्वारा पर पड़चू तो एक साधु और भिक्षुक के रूप धारण करके द्वारा आते सेठ-सेठानी से कते हैं मईया हमें बहुत तेज भूख लगती है भोजन खिलाइये अगर तुम

लोग भोजन नहीं खिलाये तो हम श्राप दे देंगे। फिर वन्दार हो जाओगे। तब सेठानी हंस कर बोलती है कि क्या तुम श्राप नहीं देना हम भोजन खिलायेंगे सेठानी माता पार्वती और महारदेव को अच्छे पकवान मांग दिये तब उसके पुत्र इधर-उधर हो रहे थे। कभी रोटी लाते तो कभी सन्धी ला कर देते। यह देकर माता पार्वती बड़ी खुश होती। माता पार्वती सोचती है महारदेव का प्रसार है इसलिए यह अति चंचल है। सेठ सेठानी आई माता पार्वती महारदेव के चरणों में गिर पड़ती है। सेठ-सेठानी कहती हमारे खाने में कोई कमी तो नहीं। बुद्धिपा में हमें पुत्र प्राप्य हमें खोना नहीं। माता पार्वती महारदेव गुस्सारे द्वारा आता है। दान-दक्षिणा जीव-जन्तु का सहायता करो। धर्म पुण्य करो श्रावण मास में सोमवार व्रत करो। तुम्हारे नसीब एक पुत्र नहीं था। यह चिड़िया की विनती है हमारे कैलाश पर्वत जाकर तुम्हारे लिए विनती करती यह सब चिड़िया का सहायता है। तब महारदेव पार्वती अपने साक्षात् प्रकट हो जाते हैं और सेठ-सेठानी आशीर्वाद देकर चले जाते हैं।

--00--



## न्यू शिक्षा नीति

राष्ट्री बरतकार  
बी.ए. द्वितीय वर्ष

### नई शिक्षा नीति -

भारत को वैश्विक महाशक्ति बनाने के इतिहास में एक से प्रतीक्षित नई शिक्षा नीति को नवम्बर 29 जुलाई 2020 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमण्डल की बैठक में मंजूरी दे दी गई। नई शिक्षा प्रणाली में परिवर्तनकारी सुधार लाना है। 34 साल पुरानी शिक्षा प्रणाली को बदलना भारत को वैश्विक शक्ति के रूप में मजबूत करने की दिशा में एक और बड़ा कदम है।

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के कार्यकाल में 1985 में शिक्षा मंत्रालय को मानव संसाधन विकास के रूप में नया नाम दिया गया और 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का गठन किया गया। पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव राजीव गांधी मंत्रिमंडल के पहले मानव संसाधन विकास मंत्री थे।

नई शिक्षा नीति में पुरानी शैक्षणिक संरचना बनाम नई शिक्षा पद्धति -

नई एनईपी में मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय करना भी शामिल है। एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना को बढ़ावा देते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने द्वाीट किया। एनईपी में छात्रवृत्ति की उपलब्धता को व्यापक बनाने ओपन और डिफेंस लर्निंग के लिए बुनियादी ढांचे को मजबूत करने ऑनलाइन शिक्षा और प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ाने जैसे पहलुओं पर बहुत ध्यान दिया गया है। ये शिक्षा क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण सुधार है। द्वाीट श्रेड में एनईपी का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा मैं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मंजूरी रहे दिल से स्वागत करता हूं। यह शिक्षा क्षेत्र में लंबे समय से प्रतीक्षित और बहुप्रतीक्षित सुधार था जो अपने

वाले समय में लाइवों लोगों के जीवन को बदल देगा।

नई शिक्षा प्रणाली आने वाले समय में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हो सकती है। कुछ लोगों ने इसका खुले मन से स्वागत किया है और कुछ के लिए इसमें किए गए बदलाव अभी भी श्रमिंत करने वाले हैं। आम आरमी के लिए इसे समझना आसान बनाने के लिए यहां एनईपी की कुछ प्रमुख विशेषताएं हैं।

**कोविड-19 का एम्बोए पर प्रभाव -**

1. मोडिकल और विधि महाविद्यालयों को छोड़कर सभी उच्च शिक्षा संस्थान एक ही नियामक द्वारा शासित होंगे।
2. बौद्ध परीक्षाएं अब अधिक अनुप्रयोग एवं ज्ञान-आधारित होंगी।
3. सार्वजनिक और निजी दोनों उच्च शिक्षा संस्थान समान मानदण्डों के अंतर्गत शासित होंगी।
4. उच्च शिक्षा संस्थानों और विश्वविद्यालयों के लिए सभी प्रवेश परीक्षाएं सामान्य रूप से आयोजित की जायेंगी।
5. स्कूल पाठ्यक्रम में मूल अवधारणाओं पर अधिक ध्यान दिया जायेगा।

**भारत में नई शिक्षा नीति के बारे में विस्तार से -**

एनईपी को शुरू करने और लागू करने का मुख्य उद्देश्य सभी के लिए समान रूप से शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना और भारत को वैश्विक महाराष्ट्र के रूप में मजबूत करने की दिशा में आगे बढ़ना है। एनईपी का मसौदा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के पूर्व प्रमुख कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में एक पैनल द्वारा तैयार किया गया था और 2019 के पदभार ग्रहण करने पर केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश गोखरियाल को प्रस्तुत किया गया था।

1. स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों के लिए समान नियम - एनईपी प्रो-स्कूल से लेकर उच्च शिक्षा तक सभी स्तरों पर शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करने पर केंद्रित है।
2. प्राथमिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के लिए नया पाठ्यक्रम - एनईपी 10+2 पाठ्यक्रम संरचना को 5+3+3+4 संरचना से बदल देगा। नई प्रणाली में 12 साल की स्कूली शिक्षा और 3 साल की प्रो-स्कूलिंग/आंगनबाड़ी का प्रस्ताव है। 3.6 वर्ष की आयु को विश्व स्तर पर बच्चे के मानसिक विकास के लिए महत्वपूर्ण आयु माना जाता है।
3. बुनियादी साक्षरता पर जोर - एनईपी के अनुसार मानव संसाधन विकास मंत्रालय आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर एक राष्ट्रीय मिशन स्थापित करेगा। 2025 तक राज्य सभी प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 3 तक के छात्रों के लिए आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता प्राप्त करने के लिए एक कार्यक्रम तैयार करेंगे और उसे लागू करेंगे। इस दिशा में उठाया गया एक और कदम राष्ट्रीय पुस्तक संवर्धन नीति का निर्माण दे।

4. क्षेत्रीय/स्थानीय भाषा को बढ़ावा देना - एनईपी में 5वीं या 8वीं कक्षा तक शिक्षा का माध्यम बनकर क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने का प्रस्ताव है। संस्कृत स्कूल के सभी स्तरों पर एक वैकल्पिक तीसरी भाषा होगी।

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी (छ.ग.)

संस्कृति के अलावा अन्य भाषाएं भी वैकल्पिक विषयों के रूप में उपलब्ध होंगी। माध्यमिक स्तर की शिक्षा में अन्य विदेशी भाषाओं का शिक्षण भी शामिल होगा। आईएसएल (भारतीय सांकेतिक भाषा) को पूरे देश में मानक बनाया जायेगा और राष्ट्रीय और राज्य विद्यालयों के लिए श्रवण बाधित छात्रों के लिए शिक्षण सामग्री विकसित की जायेगी।

5. शिक्षकों की भर्ती की प्रक्रिया में बदलाव - अब शिक्षकों की भर्ती अधिक पारदर्शी तरीके से की जायेगी और पदोन्नति योग्यता के आधार पर होगी। NCERT शिक्षकों और विशेषज्ञ सांठनों तथा सभी स्तरों और क्षेत्रों में SCERT के साथ विचार-विमर्श करके NCTE द्वारा 2022 तक कॉमन रेगुलेशन प्रोफेशनल स्टैंडर्ड्स (NPSJ) बनाये जायेंगे।

6. मानक निर्धारण और मान्यता कार्यक्रम - नई शिक्षा नीति 2020 विश्वविद्यालयों नीति विनियमन, संचालन और निर्माण के लिए स्पष्ट और विशिष्ट प्रणाली प्रदान करती है। राज्य/केंद्र शासित प्रदेश एक स्वतंत्र पब्लिक स्कूल गुणवत्ता मानक प्राधिकरण (SSSA) बनायेंगे। सार्वजनिक जवाबदेही और निगरानी के लिए SCERT द्वारा स्कूल गुणवत्ता मूल्यांकन और मान्यता ढांचा (SQAAE) नामक एक नया निकाय बनाया जायेगा यह पारदर्शी सार्वजनिक स्व-प्रकटीकरण को बढ़ावा देगा।

**उच्च शिक्षा में लाने गये परिवर्तन**

1. जीईआर में 50% वृद्धि :- एनईपी का लक्ष्य वर्तमान जीईआर (सकल नामांकन अनुपात) को 26.3% से बढ़ाकर 2035 तक 50 करना है। एनईपी के अनुसार यह अनुमान लगाया जा रहा है कि उच्च शिक्षा के लिए 3.5 करोड़ नई सीटें जोड़ी जायेंगी।
2. समग्र बहुविधयक शिक्षा :- नीति में समग्र बहुविधयक और व्यापक आधारित स्नातक शिक्षा के लिए लचीली अध्ययन योजनाएं विषयों को चुनने में अधिक विकल्प, व्यावसायिक शिक्षा पर अधिक ध्यान देना और अधिकृत प्रमाणन के साथ पाठ्यक्रम में प्रवेश करने और अधिकृत प्रमाणन बाहर निकलने के लिए अधिक लचीलापन प्रदान किया गया है। स्नातकों के पास अब उचित प्रमाणन के सा 1-4 साल तक की अपनी आवश्यकता के अनुसार वर्षों को संख्या चुनने का विकल्प होगा। उदाहरण के लिए 1 वर्ष के बाद सर्टिफिकेट, 2 वर्ष बाद उन्नत डिप्लोमा, 3 वर्ष के बाद सर्टिफिकेट के बाद लाइसेंस और 4 वर्ष के बाद अनुसंधान लाइसेंस।
3. विनियम :- भारतीय उच्च शिक्षा आयोग (NECI) की स्थापना विकसित और कानूनी शिक्षा को छोड़कर सभी उच्च शिक्षा के लिए एक एकल और व्यापक समन्वय निकाय के रूप में की जायेगी। NECI के चार स्वतंत्र कार्यक्षेत्र होंगे।

1. उच्च शिक्षा विनियम के लिए राष्ट्रीय परिषद (एनएचईआरसी)

2. मानकीकरण के लिए सामान्य शिक्षा परिषद (जीईसी)

3. उच्च शिक्षा अनुदान परिषद (GEGC) से वित्तपोषण

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी (छ.ग.)

4. मान्यता के लिए राष्ट्रीय मान्यता परिषद (एनएसी)
4. संस्थागत संरचना :- विश्वविद्यालयों को परिभाषित करने से अनुसंधान केंद्रित विश्वविद्यालयों से लेकर शिक्षा-केंद्रित विश्वविद्यालयों और स्वतंत्र डिग्री देने वाले कॉलेजों तक कई तरह के संस्थानों के निर्माण की अनुमति मिलेगी। विश्वविद्यालयों की संरचना 15 वर्षों में समाप्त कर दी जानी चाहिए और विश्वविद्यालयों को प्रागैश्रील स्थायता प्रदान करने के लिए एक प्रागैश्रील तंत्र स्थापित किया जाना चाहिए। समय के साथ प्रत्येक विश्वविद्यालय से एक स्वतंत्र डिग्री देने वाला विश्वविद्यालयों या एक कॉलेज बनने की उम्मीद की जाती है जो एक विश्वविद्यालय का गठन करता है।
5. शिक्षक प्रशिक्षण :- NCTE, NCERT के परामर्श से शिक्षक प्रशिक्षण के लिए एक नया व्यापक राष्ट्रीय शैक्षिक ढांचा NCFTE तैयार करेगा। नई शिक्षा प्रणाली की नीति के अनुसार 2030 तक किसी भी संस्थान में पढ़ाने के लिए शिक्षक को न्यूनतम 4 वर्षीय B.Ed. डिग्री की आवश्यकता होगी। निम्न गुणवत्ता वाले स्थायत शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों (TIE) के खिलाफ निरंतर कार्रवाई की जायेगी।
6. ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग :- ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग की जॉईंआर बढ़ाने में अहम भूमिका होगी। ऑनलाइन कोर्स और डिजिटल रियॉनैक्टरी, रिसर्च फॉइंडा छात्र सेवाओं में सुधार, क्रेडिट के आधार पर एमओओसी की मान्यता आदि जैसे उपाय किये जायेंगे ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह कक्षा कार्यक्रमों की उच्चतम गुणवत्ता प्रदान करने के मानकों को बनाये रखे।
7. ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल शिक्षा :- महामारी के हालातिया प्रकोप के मद्देनजर ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एनईपी में व्यापक सिफारिशों की गई है ताकि किसी भी समय और कहीं भी गुणवत्तापूर्ण वैकल्पिक शिक्षा, मोड की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके मानव संसाधन विकास मंत्रालय केवल डिजिटल सामग्री और बुनियादी ढांचे के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करने वाली एक विशेष इकाई बनायेगा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उच्च शिक्षा और स्कूलों के लिए ई-शिक्षा का पवित्र्य लक्ष्य पूरी हो।
8. व्यावसायिक शिक्षा :- सभी प्रकार की व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण उच्च शिक्षा प्रणाली का एक मूलभूत हिस्सा होंगे जिससे छात्रों का विभिन्न व्यवसायों के लिए आधार मजबूत होगा। क्षेत्र या क्षेत्र के अनुसार स्थानीय व्यवसायों में छात्रों को वर्ष में 10 दिनों की इंटरशिप भी प्रदान की जायेगी। स्थायत तकनीकी और विश्वविद्यालय स्वरूप्य विज्ञान विश्वविद्यालय, कानूनी और कृषि विश्वविद्यालय आदि का उदररथ्य बहुविषयक संस्थान बनना है।
9. वित्तीय शिक्षा :- एनईपी का लक्ष्य मौजूदा जीडीपी को जल्द से जल्द 6% तक बढ़ाना है और इसके लिए राज्य और केंद्र सरकार दोनों मिलकर काम करेंगे और शिक्षा क्षेत्र में सार्वजनिक निवेश को बढ़ावा देंगे।

--00--



रखेता खाण्डे  
बी.ए. द्वितीय वर्ष

## आखिरी मुलाकात (बड़े भैया)

मैं उन्हें अपना बड़ा भाई मानता था। वे भी मुझे छोटे भाई सा दुलार देते थे। खून का रिश्ता तो नहीं था हमारा किसी दैवीय शक्ति से एक दूसरे से गहरे तक जुड़े थे हम। मैंने नयी-नयी सरकारी नौकरी ज्वाइन की थी। मेरी पोस्टिंग बक्सर में थी। वे मेरे सीनियर थे।

राज्य के सुदूर दूसरे छोरों के रहने वाले थे। इस शहर के बारे में जानते तक नहीं थे। इस शहर के बारे में जानते तक नहीं थे। न इधर आने के बारे में कभी सोचा था। मेरे घर से थोड़ी दूरी पर एक फिरोज के मकान में रहते थे। हम अक्सर साथ-साथ ड्यूटी पर जाते। ऑफिस में वे मुझे पर पूरा ध्यान रखते। सरकारी विभाग के नियम, कानून, कार्यशैली के बारे में अक्सर मुझे बताते-समझाते।

मुझे किसी काम से परेशान देख फटा नहीं कैसे वे भांप जाते थे, उठकर मेरे पास आते, पूछते कागज-कलम ले मेरे काम को दुरुस्त करने में लगा जाते। मैं चाकिल हो बस उन्हें देखता रह जाता। काम पूरा कर वे मेरी पीठ पर हाथ रखते हुए मुस्कुराकर कहते -

“बस हो तो गया।” मैं ‘धन्यवाद’ कहता तो वह गले लगा लेते। ऑफिस से लौटने के बाद शाम को कभी मैं उनके अपने घर जाता, कभी वे मेरे घर आते। साथ-साथ चाय पीते। यह अनवरत सिलसिला निर्बाध चलता रहा।

चुनाव कार्य में हमारी ड्यूटी पड़ती थी। यह बड़ा मतदान कार्य संपन्न कराने का पूरी प्रक्रिया समझाते। मेरा पेशा वर्क कर मुझे सिखाते। प्रेम से डांटते भी। वे मेरे बिना और मैं अपने बिना नहीं रह पाते। वे कहा करते हम किसी जन्म में जरूर भाई-भाई रहे होंगे। तभी इश्वर ने फिर हमें मिला दिया है। वे चिकित्कट मिक्चर चूड़ा साथ रखते और बड़े प्यार से मुझे खिलाते-खाते। तीन वर्ष के बाद ट्रांसफर दूसरे शहर में हो गया। मैं सुबह निकलता तो लौटते-लौटते रात हो जाती थी। हम रोज मिल नहीं पाते थे। मोबाइल का जमाना नहीं था। मुझे पता चलता वे घर आकर मां-पत्नी बच्चों से मेरे बारे में पूछकर आश्चर्य हो चले जाते थे।

शनिवार को मैं थोड़ा पहले आ जाता था। शाम को वे भाभी के साथ बैठकर अपने घर पर बेसबजी से मेरा इंतजार कर रहे होते थे। मैं नियमित रूप से शाम पांच बजे उनके घर पहुंचता था। मुझे देखते ही उनके चेहरे पर चमक आ जाती थी। मैं उन्हें प्रणाम करता, तो वे उठकर मुझे गले लगा लेते। भाभी निच्छल नेत्रों से भाई-भाई का यह निरखल प्रेम निहारती रहती। हम तीनों साथ बैठ कर चाय पीते थे। कभी भाभी बड़े प्रेम से भूंगा बनाकर लाती थीं। दर तक ढेर सारी बातें होती थीं।

फिर-प्रमोशन के साथ उनका ट्रांसफर हो गया। बिछड़ने की पीड़ा से मन थोरी दरे को दुःखी हुआ। मगर

मैंने मन को किसी तरह समझाया। उस दिन जब उन्हें शहर छोड़कर हमेशा के लिये जाना था स्टेशन पर ट्रेन को इंतजार में मैं उनके आंखों में आसूँ देख भरे जो भर आया था भाभी की आंखें भी डबडबा गईं। न जाने रिसते की कौन सी डर थी जो हमें बांधे जा रही थी। ट्रेन आई, सारा सामान चढ़ाकर उनके चरण स्पर्श कर चलने को हुआ, तो उन्होंने हाथ पकड़ मुझे भी ट्रेन में खींच लिया। बगल में बिदाया मेरे हाथ अपने हाथ में लेकर पूछा "हम फिर कब मिलेंगे ?" मैंने उनकी आंखों में देकखर देखते हुए कहा "बहुत जल्दी भैया" और अपने आंसुओं को रोकने का निरर्थक प्रयास करता हुआ मैं ट्रेन से नीचे उतर गया। ट्रेन चली तो नजरों से ओझल होने तक, मैंने देखा वे छिड़की से हाथ हिला रहे थे यह हमारी मुलाकात थी।

उनके जाने के बाद फोन से बातें होती थी। मेरे कुशलक्षेम जान उन्हें सुकून मिल जाता था। अचानक एक दिन मुझे सूचना मिली कि हृदयगत रूकने से उनका देहान्त हो गया है। बरसों से सर्चिंत और सिर्चिंत निःशब्द भावनाएं आसूँ बन आंखों में उतर आईं। बाद में मैं उनके गांव गया। भाभी ने मुझे देखते ही मेरा हाथ पकड़कर पूछा "आपके गम जो कहा गये" वे मुझे अपना "लक्ष्मण" कहती थी और कहा "रोना नहीं है। उन्हें दुःख होगा। भाभी के शब्द मुझे भावनाओं की ..... गहराइयों में ले गये। जहां शब्द गौण हो जाते हैं सिर्फ एहसास और संवेदनाएं जिंदा रहती हैं। मुझे याद नहीं, उस समय कैसे मैंने अपने आंसुओं को रोका था। उस दिन मैंने महसूस किया कुछ रिसते इंसानी जहां से परे होते हैं। देवीय शक्ति से बंधे होते हैं सचमुच वे मेरे अपने से भी अपने थे। उनका प्रेम निःस्वार्थ निरखल था उनके गांव के लोग कहा करते थे - वे इंसान नहीं देवता थे। उनके शब्द आज भी मेरे कानों में गूँजते हैं। उन्हें मैं आज भी अपने आसपास महसूस करता हूँ और मुझे विश्वास है वे जहां भी है मुझ पर स्नेहिल नजर रखे हुए हैं। उनको गये दस साल से ऊपर हो गये। आज भी भाभी और बच्चों से बातचीत होती है। आज भी वे मेरे "गाम" है और मैं उनका "लक्ष्मण" जीवन के शर संधान में लगा। वे सदा मेरे साथ है मेरी स्मृतियों में, मेरे कार्यों में।

**मैं हिन्दू परठपरा में गर्व महसूस करता हूँ लेकिन मुझे भारतीय परठपरा में और ज्यादा गर्व है।**

- अटल बिहारी वाजपेयी

**यदि कोई व्यथित स्वयं नही है तो वह स्वस्थ नही रह सकता है, और यदि स्वस्थ नही है तो स्वस्थ मनोदशा के साथ नही रह पायेगा। स्वस्थ मनोदशा से ही स्वस्थ चरित्र एवं देश का निर्माण होगा।**

- महात्मा गांधी



**चीजों से प्यार**  
लोकेश कुमार सूर्यवंशी

**भूमिका :-** हमारी जिंदगी में कई चीज ऐसी होती है जो हमारे दिल के काफी करीब होती है। जो सिर्फ वस्तुएं नहीं बल्कि हमारी भावनाओं और यादों का हिस्सा बन जाती है। यह चीजें हमें हमारे बचपन, कॉलेज लाइफ या किसी खास इंसान की याद दिलाती है। कभी पुरानी फिलाब कभी एक टूटी घड़ी, को कभी कई छोटे-बड़े वस्तुएं आपके दिल को बहत ही प्रफुल्लित कर देते हैं। ये हमारे भावनाओं में धुल गये होते है जो हमारी खुशी, उदासी, हंसना ये सभी का कारण बन जाती बीते हुए लम्हों को जिंदा रखती है।

पुरानी चीजों और उनकी अहमियत - हमारे पास कई ऐसी चीज होती है जिन्हें हम फेंक नहीं पाते क्योंकि उनसे हमारी यादें जुड़ी होती है।

- **पुरानी घड़ी** - जो भले ही अब बंद हो गई है लेकिन मुझे मेरे दादा-दादी की याद दिलाती है या किसी को उसके कोई खास इंसान की भी याद दिला सकती है।
- **कॉलेज का परिचय पत्र** - जो हमारे बीते दिन कैसे हम प्रथम वर्ष में क्या किये, कैसे रहे, ये सभी याद दिलाते हैं।
- **पुरानी साइकिल** - जिससे हम हमारे सभी दोस्त गाम को लांग ड्राइव पे जाया करते हैं।

**क्यों करते हैं हम याद :-**

- यह हमें Nostalgiya कराती है।
- यह हमें उन लम्हों और उन लोगों की याद दिलाती है जिन्से हम जुड़े रहे हैं।
- कभी-कभी ये चीजें सपनों और संघर्षों की कहानियां भी बर्ण करती है।

--00--

## शील से लाभ तथा हाडि



**नीलम बस्करार**  
बी.ए. द्वितीय वर्ष

वर्तमान परिदृश्य में सोशल मिडिया का संचालन अधिक मात्रा में हो रहा है लोग शिक्षा से लेकर बिजनेस तक का प्रचार, मीडिया के माध्यम से करते हैं जिसके कारण वे अपने Reels व्यवसाय को आगे पाये गये है जो निम्न है :-

- Reels के लाभ -**
- Reels के माध्यम से लोगों से जुड़े रह सकते हैं।
  - Reels के माध्यम से घर बैठे पैसा कमा सकते हैं।
  - Reels को बिजनेस को बढ़ा सकते हैं।
  - Reels के माध्यम से फेमस हो सकते हैं।
  - Reels के माध्यम से लोगों से जुड़े रह सकते हैं।

**Reels से हानि -**

- तनाव और डिप्रेशन
- Reels में सच व झूठ का पता नहीं चलता।
- Reels के कारण समय की बर्बादी होती है तथा रिसर्चों में तनाव।
- फोटोज और विडियोस का गलत इस्तेमाल।
- ऑनलाइन फ्रॉड

--00--





हिमांशी कौशिक  
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

## मेरी माँ

माँ वो एहसास है जिसे शायद हम शब्दों में बयां नहीं कर सकते। उनका होना हमारी जिंदगी में उतारन ही जरूरी है जितना हमारे शरीर में रिला। अगर मां नहीं हो हम नहीं। मां जीवन का वो हिस्सा होती है जो हमारी जिंदगी को राह दिखाती है जो ईंट-पत्थर के भकान को घर बनाती है जो स्वयं घर की लक्ष्मी होती है। मां हमें अपने संस्कारों से संवारती है जिसकी सुंदरता इतनी अधिक होती है कि जिसका अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता। मां वो होती है जो हमारा ध्यान रखते-रखते खुद का ध्यान रखना ही भूल जाती है फिर भी उन्हें इसका कोई गम नहीं होता। मां के लिए तो हम हमेशा बच्चे ही होते हैं चाहे हम कितने ही बड़े क्यों न हो जाए इसलिए तो हमें मां का प्यार सबसे पहले चाहिए होता है स्कूल, कॉलेज या कहीं से वापस आते ही हमें मां का चेहरा ही देखना होता है न जाने क्यों लेकिन मां को देखते ही मानो एक सुकून सा मिल जाता है। उनका प्यार, उनका गुस्सा उनको नाराजगी मानो सब एक ही है। मां हमारे जीवन के उस पहलू को भी सुलझा देती है जिससे हम स्वयं अनजान होते। मां से घंटों बातें करके भी मन नहीं भरता। लगाता है जैसे कि ये समय यही धम जाए। हमें रात में पढ़ाई करनी हो या फिर हमारी तबियत बिगड़ी हो हमारे साथ रात भर जगने के लिए सिर्फ मां ही होती है। दुनिया की कितनी ही परेशानियां हो कोई भी मुसीबत हो मां हमेशा हमारे सामने हमारी ढाल बनके खड़ी होती है। मां तो अपनी पूरी जिंदगी हमारे नाम कर देती है। मां तो आरत होती है हमारी उनको बिना तो शायद हम अपने जिंदगी की कल्पना भी नहीं कर सकते। मां हमारे जिंदगी का वो फूल होती है जिससे हमारा जीवन महकता है।

## दोस्ती



छाया बांधेकर  
बी.एस.सी. अंतिम वर्ष

जीवन में दोस्तों का होना बहुत जरूरी है दोस्तों के होने से दुख में भी सहारा मिलता है दोस्त हो तो जीवन जीना भी आसान हो जाता है क्योंकि दोस्तों के साथ गम बांट लेने से गम कम हो जाता है एक सच्चे दोस्त से हमें प्यार, स्नेह और खुशियां मिलता है जो एक साधारण से जीवन को खस बना देती है दोस्ती में मतलब नहीं हो और अगर मतलब हो तो वो दोस्ती नहीं होती है दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जिसे हम खुद बनाते हैं और सच्ची दोस्ती कभी खतम नहीं होती है वो हमेशा बारकार रहती है।



प्रिया यादव  
भूतपूर्व छात्रा, एल्गुमिनी

## इन्द्रधनुष में काला रंग क्यों नहीं होता

यह बहुत ही महत्वपूर्ण सवाल है कि इन्द्रधनुष में काला रंग क्यों नहीं होता है कलर स्पेक्ट्रम में काला रंग कहां पड़ता है ? लोग जब इन्द्रधनुष देखते हैं, तो उसमें रंगों का क्रम होता है लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला इंडिगो और बैंगनी। आपने ध्यान दिया होगा कि कुछ रंग क्लासिक इन्द्रधनुष में नहीं दिखते। उदाहरण के लिए काला रंग कहां है ? स्पेक्ट्रम में काला रंग कहां पड़ता है जानने से पहले यह जानना जरूरी है कि प्रकाश वास्तव में क्या है ? प्रकाश वह ऊर्जा है जिसे विद्युत चुम्बकीय विकिरण कहते हैं। यह फोटॉन नामक ऊर्जा कणों की एक धारा से बना है। प्रत्येक फोटॉन का अपना ऊर्जा स्तर होता है। फोटॉन को समझने के लिए हम दो विशेषताओं का उपयोग कर सकते हैं इसकी आवृत्ति यह कि यह यात्रा करते समय कितनी तेजी से आगे-पीछे कंपन या दोलन करता है और इसकी तरंगदैर्घ्य उन दोलनों के बीच की दूरी है। 400-700 नैनोमीटर की सीमा की भीतर तरंगदैर्घ्य वाले फोटॉन जैसे ही आंखों में प्रवाहित होते हैं आपका मस्तिष्क उन्हें प्रकाश के रूप में मानता है। वैज्ञानिक इन फोटॉनों को दृश्य विकिरण कहते हैं। अलग-अलग तरंग दैर्घ्य वाले फोटॉन पिन्-पिन्-पिन्-पिन्-पिन् के रूप में दिखते हैं। तरंगदैर्घ्य के मिश्रण संयोजित होते हैं और नए रंगों के रूप में प्रकट होते हैं लेकिन कला और सफेद रंग हमें इन्द्रधनुष में कभी नहीं दिखते। काला दरअसल किसी भी रंग की अनुपस्थिति को दर्शाता है यह तब होता है जहां प्रकाश ही न हो, दूसरी ओर सफेद सभी रंगों का मिश्रण होता है। सूर्य की सफेद किरणों जब पानी की बूंदों से गुजरती है तो वह विभिन्न रंगों में बंट जाता है जो हमें इन्द्रधनुष के रूप में दिखती है। भूरा रंग चूँकि लाल और हरे रंग का मिश्रण होता है। इन्द्रधनुष में ये दोनों रंग एक-दूसरे से दूर होते हैं इसलिए भूरा नहीं बना पाते यही बात दूसरों रंगों पर भी लागू होते हैं। इन्द्रधनुष में काला रंग बेशक न हो लेकिन विद्युत चुम्बकीय स्पेक्ट्रम में कहीं भी फोटॉन को काले रंग के रूप में देखा जा सकता है हमारी आंखें प्रकाश की तरंगदैर्घ्य और शक्ति का पता लगाती हैं, लेकिन हमारा दिमाग इसकी व्याख्या करता है इसलिए रंग बोध हमेशा संदर्भ पर निर्भर करता है। तो जब आली बार आप इन्द्रधनुष देखें तो जरूर ध्यान दें कि कौन से रंग आपको दिख रहे हैं और कौन से नहीं। प्रकाश वह ऊर्जा है जिसे विद्युत चुम्बकीय विकिरण कहते हैं। यह फोटॉन नामक ऊर्जा कणों की धारा से बना है। प्रत्येक फोटॉन का अपना ऊर्जा स्तर होता है।

काला और सफेद रंग हमें इन्द्रधनुष में कभी नहीं दिखते। काला दरअसल किसी भी रंग अनुपस्थिति को दर्शाता है यह तब होता है जहां प्रकाश ही न हो। दूसरी ओर सफेद सभी रंगों का मिश्रण होता है।

महाविद्यालयीन वार्षिक परीक्षा

## बहोते विरूद्ध सफलता



पिया यादव  
पूर्वपूर्व छात्रा, एरुमुपिनी

1. मैं इतनी बार हार चुका, अब हिम्मत नहीं....  
अब्राहम लिंकन 15 बार चुनाव हारने के बाद राष्ट्रपति बने।
2. मैं अत्यंत गरीब घर से हूँ....  
पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जिसे मिसाइल मेन के नाम से जाना जाता है वह भी अत्यंत गरीब घर से था।
3. मुझे उचित शिक्षा लेने का अवसर नहीं मिला।  
उचित शिक्षा का अवसर भारत के संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर को भी नहीं मिला था उन्होंने अमेरिका में स्कॉलरशिप से पढ़ाई की।
4. बचपन से ही अस्वस्थ था....  
ऑस्कर विजेता अभिनेत्री मरली मेटलिन भी बचपन से बहरी व अस्वस्थ थी।
5. मैंने साइकिल पर आधी जिंदगी गुजारी है....  
निरमा के मातृक करसन भाई पटेल ने भी साइकिल पर निरमा बेवा औ एम.डी.एच. के ताऊ ने टगो पर मसाला बेचा और जिंदगी गुजारी।
6. एक दुर्घटना में अपाहिज होने के बाद मेरी हिम्मत चली गयी....।  
प्रख्यात नृत्यांगना सुधा चन्द्रन को देख लीजिये इनके पैर नकली है।
7. मुझे बचपन से ही मंदबुद्धि कहा जाता था....।  
श्यामस अल्वा एडीसन को भी बचपन से मंदबुद्धि कहा जाता था।
8. बचपन से ही मेरे पिता का देहांत हो गया था....।  
प्रख्यात संगीतकार ए.आर. रहमान के पिता का भी देहांत बचपन में हो गया था।
9. मुझे देते बीमारियां है....।  
जर्निन एयलंडन के प्रमुख भी अनेकों बीमारियां थी। राष्ट्रपति रूजवेल्ट के दोनों पैर काम नहीं करते थे। स्टीफन हॉकिंग
10. मैं एक छोटी सी नौकरी करता हूँ....। इससे क्या होगा....  
श्रीरू अंबानी भी छोटी नौकरी करते थे पम्प में तेल भरने की
11. मुझे बचपन से ही परिवार की जिम्मेदारी उठानी पड़ी....।  
लता मंगेशकर को भी बचपन से परिवार की जिम्मेदारी उठानी पड़ी थी।

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी (छ.ग.)

लक्ष्य

महाविद्यालयीन वार्षिक परीक्षा

## भेरे पापा



युशब्बू यादव  
बो.पम्.सो. द्वितीय वर्ष (बायो)

12. मेरी कंपनी एक यात्रा दिवालिया हो चुकी अब मुझ पर कौन भरोसा करेगा....।  
दुनिया की सबसे बड़ी शीतल पेय निर्माता पेप्सी कोला भी दो बार दिवालिया हो चुकी है।
13. मेरा दो बार नर्वस ब्रेकडाउन हो चुका है....।  
डिज्नीलैंड बनाने के पहले वाल्ट डिज्नी का तीन बार नर्वस ब्रेकडाउन हुआ था।
14. मेरी उम्र बहुत ज्यादा है....।  
विराव प्रसिद्ध केन्दुकी फ्राइड विकन के मातृक 60 साल की उम्र में पहले रेस्टोरेन्ट खोला था। अमिताभ ने अपनी फिल्म 27 की उम्र में बनाई थी।
15. मेरे पास धन नहीं है....।  
इन्फोसिस के पूर्व चयरमैन नारायणमूर्ति के पास भी धन नहीं था उन्हें अपनी पत्नी की गहने बेचने पड़े।
16. मेरे पास बहुतमूल्य आर्डिचवा है पर लोग अस्वीकार देते हैं।  
जोरॉस फोटोकॉपी मशीन के आर्डिचवा को भी देरों कर्पणियों ने अस्वीकार किया था पर आज परिणाम सामने है।
17. शीर्षक :- आज आप जहां भी है या कल जहां भी होंगे इसके लिए आप किसी और को जिम्मेदार नहीं ठकवा सकते। हर कामयाब और नाकामयाब इंसान को बिल्कुल उतना ही समय मिलता है, 24 घंटे ये आप पर डिपेंड करता है आप कैसे इन्हें खर्च करते हो। इसलिए आप आज से चुनाव करिये सफलता और सपने चाहिए या खोखले बहाने।
18. पिता वो मूर्ख है जिसकी रोशनी से हमारा पूरा जीवन खराब हो जाता है।  
पिता वो मूर्ख है जिसकी रोशनी से हमारा पूरा जीवन खराब हो जाता है।  
मैं क्या लिखूँ अपने पापा के बारे में वो तो मेरे गुरु व गुरु दानों हैं।  
जब साथ छोड़ देती है दुनिया बहेल कर एक पिता ही होते हैं जो हमेंशा साथ खड़े होते हैं अपनी बेटों को ढाल बनकर...।।  
हां है वो थोड़े कठोर लेकिन बस नारियल की तरह बस ऊपर से... हां लगता है  
डर थोड़ा उनके गुस्से से लेकिन गुस्सा में भी प्यार छुपाए रखते हैं। मेरे पापा....  
खुद से भी ज्यादा फिक्र बख्शाए रखते हैं वो हमारा लेकिन पला नहीं क्वाँ अपने बारे में पूल जाते हैं वो...  
प्यार तो बहुत करते हैं वो लेकिन बताते नहीं....  
हमें खाने से डरते हैं लेकिन बताते नहीं...  
एक बेटों का अभिमान होते हैं उनके पिता...  
वो डरती नहीं दुनिया से क्योंकि साथ होते हैं, उनके पिता एक पिता ही होते हैं जो अपने बच्चों खुद से भी ऊंची उड़ान उड़ना सिखाते हैं।  
जब डरती है दुनियां हमें तो वो उन्हें आंख दिखाते हैं तभी तो कहते हैं पिता वो मूर्ख है  
जिसके डूब जाने से पूरा जीवन अधरा हो जाता है और उनके साथ होने से जीवन संवर जाता है...  
मेरे पिता ही मेरा अभिमान है  
उनके बिना तो मेरी पूरा जीवन बीभान है ।।

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी (छ.ग.)

लक्ष्य

## Reels के लाभ और हानि के बारे में कुछ बातें



ममता मिश्रा

बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष (बायो)

लाभ :-

- आपके अपने Talent और creativity को दिखाने का एक अच्छा platform है।
- Reels के माध्यम से आप अपने Business Product या Service को Promote कर सकते हैं।
- Reels को मदद से हम अपनी कम्युनिटी बढ़ा सकते हैं, अर्थात् audience के साथ connect करने का अच्छा तरीका है।
- Reels हमारे विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक अच्छा तरीका है।

हानि :-

- Reels के अधिक उपयोग से आपका समय बर्बाद हो सकता है।
- Reels पर Fake या Misleading content के कारण हमको नुकसान हो सकता है।
- Reels के अधिक उपयोग से Mental health पर भी असर पड़ सकता है।
- Reels के अधिक उपयोग से Personal life पर भी असर पड़ सकता है।

## हर्टा कट्टा मोबाइल



निकिता सूर्यवंशी

बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष (गणित)

ये मोबाइल ....

यों ही हर्टा-कट्टा नहीं हुआ है।

इसने बहुत कुछ खाय़ा-पिया है।

मसलन ....

ये हाथ की घड़ियां खा गया

ये चिट्ठी पत्रियां खा गया

डेप रिकार्डर कैसेट, कैमरे चला गया।

ये टार्च लाइट खा गया।

ये मोबाइल, किताबें खा गया।

इसने सैंकड़ों मील की दूरियां पी है।

इन मोबाइल ने तन्हाइयां पी है।

पड़ोस की दोस्ती मेल मिलाप खा गया

समय नहीं लोगों के पास

ये लोगों के पास से लोगों का वक्त खा गया।

ये पैसे खा रहा है

ये रिश्ते खा रहा है

ये लोगों की ही ज़रूरी खा रहा है

ये लोगों को योगी बना रहा है।

ये मोबाइल फोन यों ही

हर्टा-कट्टा नहीं हुआ है।

इसने बहुत कुछ खाय़ा पिया है।

ये मोबाइल....

## सादा जीवित उच्च विचार



मनिका पार्ने

बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर

सादा जीवन उच्च विचार से पला चलता है कि हमें एक सादा जीवन जीना चाहिए, लेकिन साथ ही हमारी सोच भी सिमित नहीं होनेी चाहिए। यह तथ्य सही है कि हमें अपनी सोच को केवल रोजाना के कामों में इर्द-गिर्द तक ही सीमित नही करना चाहिए। हमें अपनी जिन्दगी के साथ-साथ हमारे आसपास के महत्व पर जोर देनी है। हमें अपनी इच्छाओं और ज़रूरतों की जांच करना चाहिए। हालाँकि जब सोच और विचारों की बात आयी है तो ये बड़े होने चाहिए। हमें केवल स्वयं के बारे में ही नहीं सोचना चाहिए बल्कि अपने आस-पास के लोगों के बारे में भी सोचना चाहिए।

“सादा जीवन उच्च विचार।

यही है जीवन का मूल आधार।।

जिसने इस मन्त्र को अपनाया।

मविष्य अपना उच्चवत् बनाया।।”

प्रस्तावना -

हम चाहते हैं कि हम अपने पड़ोसियों, मित्रों और रिश्तेदारों को प्रभावित करें। इस तरह का जीवन कभी भी संतुष्टिपूर्ण या सुखद नहीं हो सकता है। इसका कारण यह है कि हम दूसरों को खुश करने के लिए या दूसरों को प्रभावित करने के लिए जन्म नहीं लेते हैं और ना ही हम ऐसा कभी भी कर सकते हैं।

सादा जीवन उच्च विचार की परिभाषा -

सादा जीवन उच्च विचार का पर्याय उस जीवन से है, जिसमें आधारभूत ज़रूरत पूरा हो जाने पर किसी उच्च उद्देश्य के लिए जीवन को व्यतीत करना। अगर हम अपनी भौतिक इच्छाओं को कम करते हैं और अपनी ज़रूरतों को पूरा करते हैं तो हम अपनी निजी और पेशेवर जीवन के बीच एक संतुलन बना सकते हैं। इससे हमारे पास स्वयं के लिए पर्याप्त समय होगा, अपना आंकलन करने का मौका मिलेगा और हमारे जीवन के सही उद्देश्य का पला लगाने का अवसर प्राप्त होगा।

सादा जीवन उच्च विचार का महत्व -

सादा जीवन उच्च विचार हमारी जिन्दगी को संतुष्टि ला सकता है। पेशेवर बड़ा रूतवा हासिल करने और अधिक से अधिक कमाई करने के लिए काम पर बहुत अधिक समय व्यतीत करते हैं और अपने माता-पिता, जीवन साथी और बच्चों को नजरअंदाज करते हैं। यह उन्हें परिवार से दूर करती है और उनके व्यक्तिगत संबंधों में परेशानी पैदा करती है और इससे केवल तनाव ही उत्पन्न होता है।

सादा जीवन क्यों जीना चाहिए ?

बहुत कम लोग सामान्य जीवन जीते हैं, कुछ अपनी इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं और अपनी बड़ी सफलियों से दूसरों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। यहां बताया गया है कि क्यों एक सादा जीवन जीना चाहिए :-

1. परिवार के करीब आ जाते हैं - जब आप एक कृत्रिम जीवन जीना, जहाँ आप दूसरों को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं, छोड़ते हैं और एक साधारण जीवन जीने की ओर बढ़ते हैं तो आप अपने संस्कारों के और करीब रहते हैं। इससे आप अपने परिवार के सदस्यों के करीब आते हैं और उनके द्वारा दिए प्रेम से बहुत खुशी होती है।
  2. अपने आप को पहचानें - जब आप अपने आप को संतुष्ट करने वाली अधिक से अधिक चीजों की तलाश करना बंद कर देते हैं और अपने साथ समय बिताते हैं तो आप अंततः पहचान लेते हैं कि आप वास्तव में कौन हैं।
  3. नियंत्रण की भावना - जब आप एक साधारण जीवन जीते हैं तो जीने के लिए न्यूनतम चीजों की आवश्यकता होती है। जब आपके सिर पर विभिन्न चिन्तों को खरीदने के लिए कोई ऋण नहीं होता है तो आप अपने आप में अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं। इस कारण आपको अपने कर्ज और बिलों का भुगतान करने के लिए अधिक से अधिक पैसा अर्जित करने के लिए अपने काम में व्यस्त होने की आवश्यकता नहीं है। आपको पास जीवन पर नियंत्रण की अधिक भावना होती है।
  4. निम्न तनपा स्तर - आप अपने माई-बहनों, दोस्तों और पड़ोसियों की तुलना में अधिक कमाई करने के दबाव में नहीं हैं। अब आप अपने बारे में अच्छा महसूस करने के लिए एक बड़ा घर, बड़ी कार या अधिक से अधिक बैंक बैलेंस नहीं चाहेंगे। जब आपने एक साधारण जीवन चुना तो इस कोशिश के कारण सभी तनाव खत्म हो गए।
  5. संतुलित जीवन - जब आपको शीर्ष पर पर पहुंचने के लिए अपने कार्यालय में बहुत कठिन परिश्रम नहीं करना पड़ेगा। इसका कारण यह के कि आपको इच्छार् सीमित होंगी और अपनी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं मते ही आप काफी अच्छी कमाई कर रहे हो, इस प्रकार आप समय पर घर पहुंच पाएंगे और अपने परिवार के साथ समय बिता पाएंगे। यह जीवन संतुलन को बनाए रखने में मदद करता है।
- निकर्ष - जहाँ बहुत से लोग एक मध्य जिनंदगी जीने में कामयाब रहे हैं वहाँ बहुत से लोग पहले ही भयावह परिणामों को देखकर सरल जीवन की ओर अग्रसर हो गए हैं। यह सही समय है जब हमें यह समझना चाहिए कि हमें अपने लिए जीना चाहिए न कि दूसरों को प्रभावित करने के लिए, हमें समझना चाहिए कि खुशी केवल अपने भीतर मिल सकती है न कि बाहर, अगर हम एक सादा जीवन जीते हैं और बड़ी सोच रखते हैं तो केवल तब ही आंतरिक शांति और खुशी पाई जा सकती है हमें दूसरों के लिए प्रेरित करनी है।

## मोबाईल क्या है ? राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मोबाईल का उपयोग कैसे करें ? मोबाइल का उपयोग कैसे करें ?

रितिका

बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

मोबाईल क्या है ? राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मोबाईल का उपयोग कैसे करें ?

प्रस्तावना - आज के डिजिटल युग में मोबाईल फोन हारे जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है। यह एक शानदार दूर है जो हमें तुरंत बात करने, टेक्स्ट करने, फोटो क्लिक करने, फोटो भेजने, कैलेंडर मैनेज करने, इंटरनेट खोलने, संगीत चलाने, फिल्म देखने आदि के लिए किया जाता है।

आधुनिक दुनिया में, स्मार्टफोन एक आवश्यकता है। मनुष्य अपने महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए उपकरणों पर निर्भर हो गया है। इसका कारण यह है कि मोबाईल फोन में कई ऐसे एप्लीकेशन हैं जो उपयोगकर्ता के दैनिक जीवन को आसान बनाते हैं। अब मोबाईल फोन फोन रखना कोई क्लिक् सिंक्रा नहीं रह गया है। इसकी कीमतें इतनी कम हो गयी हैं कि औसत मध्यम वर्ग का व्यक्ति इसे खरीद सकता है।

मोबाईल का उपयोग प्रोजेक्ट के रूप में विभिन्न तरह से किया जा सकता है जैसे कि शिक्षा, व्यवसाय, सामाजिक कार्य आदि। शिक्षा में मोबाईल फोन का उपयोग ऑनलाइन कक्षाएँ, ई-बुक और शैक्षणिक विडियो के लिए किया जा सकता है। व्यवसाय में मोबाईल फोन का उपयोग मोबाईल बैंकिंग, डिजिटल मार्केटिंग और ग्राहक सेवा के लिए किया जा सकता है। सामाजिक कार्य में मोबाईल फोन का उपयोग सूचना को साझा करने, जागरूकता बढ़ाने और सामाजिक आंदोलनों को संगठित करने के लिए किया जा सकता है।

मोबाईल के प्रकार - मोबाईल अनेको फिचर्स से भरा हुआ है, लेकिन मोबाईल के कितने प्रकार के बारे में भी जानना जरूरी है, क्योंकि अलग-अलग मोबाई में अलग-अलग विशेषताओं से परिपूर्ण है। जैसे कुछ मोबाईल सिर्फ कॉल और एस.एम.एस. बस भेज सकते हैं, लेकिन कुछ मोबाईल में ऐसे फीचर हैं जिसमें से गाना सुनना, विडियो देखना, गेम खेलना, इंटरनेट चलाना आदि। इन्हीं फीचर्स के आधार में मोबाईल फोन को तीन प्रकार में बांटा गया है -

1. सेलफोन - यह फोन एनालॉग फोन है जिसमें से केवल कॉल और एस.एम.एस. कर सकते थे और इनमें कॉन्टेक्ट नंबर भी सेव कर सकते थे, यह फोन में ज्यादा फीचर नहीं थे, इस मोबाईल फोन में बस यही दो फीचर थे।
2. मल्टीमिडिया फोन - मल्टीमिडिया मोबाइल फोन पहली डिजिटल मोबाइल फोन है। यह मोबाईल फोन, सेल फोन से ज्यादा फीचर्स के साथ मार्केट में आया था क्योंकि इस मोबाईल में कॉल, एस.एम.एस., खेल, गाना,

विडियो, इन्टरनेट, कैलकुलेटर, अलास, मोबाइल रिडियो आदि चला सकते हैं। यह मोबाइल फोन 2जी, 2.5जी, 3जी के फीचर्स में है।

3. स्मार्टफोन - यह मोबाइल फोन इस समय की सबसे अच्छी मोबाइल फोन है। यह मोबाइल फोन बहुत सारे फीचर से भरपूर है। स्मार्टफोन अंड्रॉयड और आई.एस.ओ. ऑपरेटिंग सिस्टम के साथ आते हैं, इस मोबाइल में हार्ड क्वालिटी में वीडियो और ऑडियो काल, गेम, अनेक मोबाइल एप्लीकेशन तथा बहुत सारे फीचर के साथ है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) में मोबाइल का उपयोग - राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पढ़ाई के लिए मोबाइल फोन का उपयोग एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में स्वीकार किया गया है। आप इसे ऑनलाइन पाठ्यक्रम, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, शैक्षणिक विडियो और वचुबल कक्षा में भाग लेने के लिए उपयोग कर सकते हैं। यह आपके सीखने को अधिक सुगम और वैयक्तिकृत बनाने में मदद करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मोबाइल का उपयोग निम्न प्रकार से करते हैं -

1. ऑनलाइन पाठ्यक्रम और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म - कई पाठ्यक्रम और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म हैं जो आपको राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आधारित विविध विषयों पर जानकारी प्रदान करते हैं।
2. शैक्षणिक विडियो - मोबाइल, राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आधारित विभिन्न विषयों पर कई शैक्षणिक विडियो प्रदान करता है जो हमारे विषय को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकते हैं।
3. शोध कार्य - मोबाइल, राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आधारित विभिन्न विषयों पर जानकारी इकट्ठा करने में मदद करता है।

मोबाइल के उपयोग के लाभ - मोबाइल के उपयोग के कई लाभ हैं जो निम्नलिखित हैं -

1. संचार में सुविधा - मोबाइल फोन ने संचार को आसान और तेज बना दिया है। हम किसी भी व्यक्ति से कहीं भी और कभी भी बात कर सकते हैं।
2. जानकारी तक पहुँच - मोबाइल फोन के माध्यम से, हम इंटरनेट तक पहुँच सकते हैं और दुनिया भर की जानकारी तक पहुँच सकते हैं।
3. मनोरंजन - मोबाइल फोन पर गेम, विडियो, फिल्म और संगीत के माध्यम से मनोरंजन मिलता है।
4. शिक्षा - मोबाइल फोन पर शैक्षिक ऐप, वेबसाइट और विडियो के माध्यम से शिक्षा मिलती है।
5. सामाजिक कार्य - मोबाइल फोन के उपयोग से जागरूकता बढ़ाना, सूचना को साझा करना और सामाजिक आंदोलनों को संगठित करने में मदद मिलती है।
6. स्वास्थ्य - मोबाइल फोन से व्यायाम को आसान और तेज बना दिया गया है।

उत्सर्ग - एक मोबाइल फोन अच्छा या खराब हो सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम उसका उपयोग कैसे करते हैं। चूंकि मोबाइल अब हमारे जीवन का एक बड़ा हिस्सा है, इसलिए बेहतर और आसान जीवन के लिए उनका स्मार्ट तरीके से उपयोग करना महत्वपूर्ण है, हमें सावधान रहना चाहिए और उनका सही तरीके से उपयोग करना चाहिए जिससे हमारे जीवन में समस्याएं पैदा न हों, मोबाइल एक ऐसा उपकरण है जो हम पर निर्भर करता है कि हम उसका उपयोग किस प्रकार करते हैं।



## छत्तीसगढ़ी की प्रकृति भी रंग है होली के रंग में

किरण साहू,  
बी.एस.-सी. द्वितीय वर्ष

छत्तीसगढ़ एक ऐसा राज्य है जहाँ बाल-वृद्ध, युवा-वृद्धिक सब लोग एक साथ मिलकर फगुन के महीने में होली पर्व आनंद और उत्साह के साथ मनाते हैं। छत्तीसगढ़ की संस्कृति में इस पर्व का विशेष महत्व है। तन-मन सब रंगों के इस त्यौहार में रंग जाता है।

जाति, भेद, रंगभेद, ऊंच-नीच का भेद, बड़ा-छोटा का भेद सब भूलकर लोग एक साथ होली मनाते हैं। ऐसे में होली के रंग में पूरा छत्तीसगढ़ का जन-जीवन ही नहीं अपितु प्रकृति भी इस आनंद को खूब मजे के साथ खेलेता है। देखिये छत्तीसगढ़ी के मूर्धन्य कवि स्व. लक्ष्मण मस्तुरिहा की इन शक्तियों में -

“मन डोले रे मांघ फगुनवा।  
रस थोले रे मांघ फगुनवा।  
रजा बरोबर लगे मऊरे आमा।  
रानी बरोबर परसा फुलवा।।  
पुवइथा आवे बड़ौरा उड़ौवे  
घाम आवे जावे लजात मुहं खोले  
गांव गुंजे गामके अमइया  
कूके रे काली कोइलिया।।  
चौरा चौरा म धिड़के नंगारा  
खार-खार म दरिया  
मन डोले रे मांघ फगुनवा।।



## कव आही सोवहा बिहारा

प्रकाश कुमार कौशिक  
स्वच्छक

नेता मन बेच डानि अपन ईमान।  
कोन जनि कब आही सोनेहा बिहान ?  
कोन जनि कोन लाही वो नवा बिहान ?  
जेकर बर तरस गइन लइका-सियान।  
जनता बर नइ देवय कोनों धियान।  
राजनेता मन बन गिन सिरतोने बेइमान।।  
अफसर बेपारी मन बनके मसान।  
पीस डारिन जनता ल, कर दिन पिसान।।

डॉ. विमल कुमार पाठक की  
छत्तीसगढ़ी काव्य से (संकलित)



## मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

संज्ञा सारू  
बीएससी, दिल्ली संसंस्तर

“मन के हारे हार है, मन के जीते जीत” का अर्थ है कि मनुष्य की मानसिक स्थिति ही उसकी जीत या हार का निर्धारण करता है, यदि मन में नकारात्मकता है तो व्यक्ति हार जाएगा, लेकिन यदि मन में सकारात्मकता है, तो वह जीत जाएगा।

मन के हारे हार : यदि आप किसी काम को शुरू करने से पहले ही सोचते हैं कि आप इसे नहीं कर सकते या नहीं कर पाएंगे, तो आप वास्तव में हार जाते हैं। भले ही आप प्रयास न करें।

मन के जीते जीत : यदि आप किसी काम को करने के लिए दृढ़ संकल्प रखते हैं और हार नहीं मानते, तो आप ऊँचा चढ़ जाते हैं, भले ही पहले में कितनी भी बाधाएं आएँ। यह कहना है हमें सिखाती है कि हमें अपने मन पर नियंत्रण रखना चाहिए और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए।

“मन के जीते जीत है, मन के हारे हार, जो हार गए बिन लड़े, उन पर है धिक्कार।”

मन के जीते जीत है, मन के हारे हार, हार गए जो बिन लड़े, उन पर है धिक्कार। उन पर है धिक्कार जो देखे ना सतार, सतारों का अधिकार, अतएव अधिकार है अपना। रू धार का पहला धारा है, परिवर्तन का एक नारा है, यह अधिकार कुछ परत का है, फिर सब कुछ सुनारा है।”

**प्रकारधरम -** मानव जीवन में सभ्यता, सुशिक्षितता और उच्च चरित्र सम्मान्य बात है। हर व्यक्ति के जीवन में ऐसे क्षण आते हैं जब परीक्षाओं, प्रतिकूलताओं आती हैं, लक्ष्य कठिन लगते हैं और आत्मनिश्चय का इलाज होना पड़ता है। ऐसे समय में लक्ष्य को सफल बनाने का तरीका है - उसका 'मन'। यह मन ही है जो व्यक्ति को हारने पर मजबूर कर देता है या फिर उसे हार कर विजय प्राप्त करने की सहायता देता है, इसी सतारों को सतार सतारों में कहा गया है - “मन के हारे हार है, मन के जीते जीत है।”

**प्रकारधरम का उदाहरण -** मानव केवल सतारों से नहीं, बल्कि अपने मन से जीता है। मन यदि दृढ़, सकारात्मक और उन्मुखित हो तो वह अस्मरणीय भी हो सकता है। परन्तु यदि मन उदास, भयभीत या नकारात्मक हो जाए, तो व्यक्ति विजय नहीं हार पाता है, सफलता और असफलता का सीधा संबंध हमारी मानसिकता से होता है। जब हम लक्ष्य को सफल मानते हैं, तब हम कठिन लक्ष्य भी प्राप्त कर लेते हैं।

**मन के जीते जीत है -** यह अस्मरणीय के हार क्षण में पूर्ण रूप से लागू होता है -

1. **आत्मनिश्चय -** जब लक्ष्य पर अस्मरणीय स्थिति है तब बहुतों से छत्र निराशा हो जाते हैं और प्रयास करना बंद कर देते हैं। परन्तु जो निश्चय अस्मरणीय और संकट के समय फिर प्रयास करते हैं, वे अंततः सफलता प्राप्त करते हैं।

मन के जीते जीत है (अर्थ)

2. **खेलों में -** खिलाड़ी कई बार हार का सामना करते हैं, लेकिन जो मानसिक रूप से मजबूत होते हैं, वही वापस करके इतिहास रचते हैं।

3. **व्यवसाय या नौकरी में -** असफलता, उकसान या प्रतिस्पर्धा एक आम बात है, परंतु जो व्यक्ति मन से हार मान लेता है, वह फिर कभी उठ नहीं पाता। वहीं मन से जीते हुए लोग बार-बार फिरकर भी उठ नें जीत हासिल करते हैं।

**प्रातिष्ठिक एवं प्रेरणादायक उदाहरण -** इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जो इस कहावत को सच्चाई को सिद्ध करते हैं -

1. महात्मा गांधी ने अंग्रेजों को दासता के सामने कभी हार नहीं मानी। वे जानते थे कि यदि देशवासियों का मन जीत गया, तो स्वातंत्र्य निश्चित है।
2. स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को बार-बार यही सिखाया कि “उठो, जागो और जब तक मृत लुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।
3. हेलेन कैलर - जो जन्म से अंधी और बहरी थीं, उन्होंने अपने मनेबल के बल पर पूरी दुनियां में प्रेरणा का स्तरोत्पन्न कर दिया।
4. एडिसन विद्युत् बल्ब का आविष्कार किया, वे हजारों बार असफल हुए, लेकिन मन से कभी हार नहीं मानी।

**आधुनिक जीवन में प्रसंगिकता -** आज के युग में जहाँ प्रतिस्पर्धा, तनाव और असफलताएँ सामान्य हैं, यह कहावत पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गई है, सोशल मिडिया, समाज का दबाव और आत्मसंदेह लोगों को मानसिक रूप से कमजोर बना रहे हैं। ऐसे समय में यह कहावत हमें याद दिलाती है कि जब तक हमारा मन सकारात्मक है, हम अजेय हैं।

**भौतिक शिक्षा और संदेश -** इस कहावत से हमें यह सिखने की मिलती है कि जीवन में सबसे बड़ी जीत स्वयं से जीतना है। जब हम अपने डर, संकोच और नकारात्मक विचारों पर विजय पा लेते हैं, तब बाहर की हर कठिनाई छोटी हो जाती है। यदि हम आत्म-निश्चय, धैर्य और समर्पण के साथ किसी भी काम को करें, तो सफलता अक्षय्य मिलती है।

**उपसंहार -** अंततः यही कहा जा सकता है कि “मन के हारे हार है, मन के जीते जीत” सिर्फ यह कहना नहीं, बल्कि जीवन जीने के एक अद्भुत प्रेरणा है, यह हमें आत्मबल, सकारात्मक सोच और साहस के साथ आगे बढ़ने का रास्ता दिखाती है। यदि हम अपने मन को जीतना सीख लें, तो संसार को कोई भी शक्ति हमें रोक नहीं सकती। हमें हर परिस्थिति में अपने मन को मजबूत बनाना चाहिए और निश्चय रखना चाहिए कि हम जीत सकते हैं। क्योंकि -

“जहाँ चाह है वहाँ राह है, और जहाँ मन जीत गया वहाँ हर जीत संभव है।”

मन के जीते जीत है (अर्थ)



## नारी सशक्तिकरण

प्रति गुप्ता

बी.एस.सी., द्वितीय सेमेस्टर (गणित)

“अगर एक पुरुष शिक्षित होता है तो सिर्फ एक व्यक्ति शिक्षित होता है, लेकिन अगर एक नारी शिक्षित होती है, तो पूरा समाज शिक्षित होता है।”

**प्रस्तावना-** भारत जैसे विशाल और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश में नारी को देवी का दर्जा दिया गया है। लेकिन व्यवहार में उसे हमेशा दीयम दर्जे का सामाजिक माना गया है। नारी सशक्तिकरण यानी महिलाओं को अधिकार, स्वतंत्रता और सम्मान देना जिसको वे हकदार है यह न केवल एक सामाजिक बदलाव है, बल्कि एक ऐसा आंदोलन है जो पूरे देश को विकास से जुड़ा हुआ है। आज की नारी आत्मनिर्भर बनना चाहती है अपने फंसले खुर लेना चाहती है और समाज में बराबरी का दर्जा चाहती है।

1. **नारी सशक्तिकरण का सही अर्थ-** नारी सशक्तिकरण का मतलब है महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना-आर्थिक, सामाजिक, राज-नीतिक, मानसिक और शारीरिक रूप से सक्षम बनाना। इसमें महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, सुरक्षा, सम्मान अधिकार, निर्णय लेने की आजादी और सम्मान देना शामिल है यह केवल महिला केंद्रित आंदोलन नहीं, समाज से जुड़ी जिम्मेदारी है।

2. **नारी की ऐतिहासिक स्थिति-** प्राचीन भारत:- महिलाएं वेद-पठन करती थीं। गार्गी मैत्रेयी जैसी विदुषी नारियां शिक्षा, दर्शन और राजनीति में भाग लेती थीं।

**मध्यकाल-** पर्दा प्रथा, सतीप्रथा, बाल विवाह जैसे कुप्रथाओं ने नारी को सीमित कर दिया।

**ब्रिटिश काल-** राजा राजमोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्या सागर जैसे समाज सुधारकों ने सती प्रथा, बाल विवाह के खिलाफ आवाज उठाई।

**स्वतंत्रता संग्राम-** रानी लक्ष्मीबाई, सरोजनी नायडू कस्तुरबा गांधी जैसी महिलाओं ने देश को आजादी दिलाने में योगदान दिया।

3. **आज की नारी- नई पहचान के साथ-** आज की महिलाएं विज्ञान, खेल, राजनीति, मीडिया चिकित्सा, सेना और बिजनेस जैसे हर क्षेत्र में अगे हैं।

**कुछ प्रमुख उदाहरण:-**

1. **कल्पना चावला :-** भारत की पहली महिला अंतरिक्ष यात्री

2. **मीरी कॉम :-** विरव मुक्केबाज चैंपियन

3. **सुपमा स्वराज :-** विदेश मंत्री के रूप में अंतरराष्ट्रीय पहचान

**नवीन शासकीय महोदयत्व, सक्ती (छ.ग.)**

4. **शिक्षा और नारी सशक्तिकरण -** शिक्षित महिला आत्मनिर्भर बनती हैं खुद के अधिकार जानती हैं और पुरानों को भी प्रेरित करती हैं बालिकानाओं की शिक्षा को प्राथमिकता देना सशक्तिकरण की पहली सीढ़ी है कई प्राथमिक बालिकाओं में अब भी लड़कियों की पढ़ाई को बाधा राधाशा जाता है हमें बदलने की जरूरत है

5. **नारी सशक्तिकरण की जरूरत क्यों है -** महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराध (सोवू हिंसा छेड़छाड़ पब्लिश अटैक आदि) अधिष्ठा और बेरोजगारी की भार से पीड़िता आर्थिक रूप से निर्भर होने के कारण निर्णय लेने में असमर्थता सामाजिक कठिनाई और भेदभाव के कारण आत्मघृणितता की कमी कई क्षेत्रों में महिलाओं को अब भी समाज घेरना, सम्मान और पद नहीं मिलते।

“बेटी को बोज़ नहीं, पढ़ाव्य सम्पन्नो।”

नारी को कमजोर नहीं, शक्ति सम्पन्नो।

तनी बनोग भारत, आत्मनिर्भर और महान!”

6. **नारी सशक्तिकरण के सामने चुनौतियां**

1. **सामाजिक मानसिकता :-** “लड़की है ज्यादा मत पढ़ाओं शादी करनी है।”

2. **असुरक्षा की भावना:-** रोजमर्रा के जीवन में महिलाएं सुरक्षित महिस्य नहीं करती

3. **परिवार और समाज का दबाव:-** शादी, बच्चे, नौकरी छेड़ने जैसी मजबूरियां।

7. **सम्पादन और सृजन-** शिक्षा की पहुंच हर लड़की तक सुनिश्चित की जाए। लड़कियों को आत्मरक्षा और कानूनी जानकारी दी जाए। महिलाओं को लघु उद्योग, कृषि, ऑनलाइन व्यापार से जोड़ जाए। समाज में जागरूकता अभियान चलाएं जाएं। पंचायत से लेकर समस्त तक भगीरथी बढ़ाई जाए महिला सशक्तिकरण व्यवहार में उतरा जाए।

**निकट:-** नारी सशक्तिकरण सिर्फ एक शब्द नहीं, बल्कि एक विचारधारा है एक ऐसी सोच जो हमें एक बेहतर बराबरी वाले और समरस समाज की ओर ले जाती है हमें यह समझना होगा। सशक्त नारी होगी तो देश मजबूत होगा।

**जब कोई शुभवक विवाह के लिए दहेज की शर्त रखता**

**है तब वो न केवल अपनी शिक्षा और अपने देश को**

**बदनाम करता है बल्कि स्त्री जाति का भी अपमान करता है।**

**- महात्मा गांधी**

**नवीन शासकीय महोदयत्व, सक्ती (छ.ग.)**



संजीता बंजारे  
बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर (बच्ची)

## भूमिका स्मार्ट फोन

### भूमिका:

यह एक सचल दूरभाष या चल दूरभाष यंत्र है यह एक पोर्टेबल टेलीफोन है जिसे हम आसानी से कहीं भी ले सकते हैं और उपयोग कर सकते हैं फिक्स्ड-लोकेशन फोन (जैसे- लैंडलाइन फोन) के विपरीत सचल का अर्थ है कि यह उपकरण एक जगह पर फिक्स नहीं है और इसे आसानी से ले जाया जा सकता है।

दूरभाष यंत्र या टेलीफोन का अर्थ है एक उपकरण जिसके माध्यम से हम दूर बैठे व्यक्ति से बात कर सकते हैं। संक्षेप में स्मार्ट फोन का अर्थ है एक पोर्टेबल टेलीफोन जिसे हम कहीं भी ले जा सकते हैं और उपयोग कर सकते हैं।

स्मार्ट फोन सबसे उन्नत प्रकार का फोन है जो एक सरल ओपरेटिंग सिस्टम इंटरनेट कनेक्टिविटी और विभिन्न प्रकार के ऐप्स के साथ आते हैं। ये फोन कॉलिंग टेक्सटिंग, इंटरनेट ब्राउजिंग को अलावा फोटो खींचने विडियो देखने गेम खेलने और कई अन्य कार्यों के लिए भी उपयोग किए जाते हैं।

स्मार्ट फोन का उपयोग  
संचार- कॉल, मैसेज, ई-मेल  
मनोरंजन- गेम, विडियो, संगीत  
शैक्षिक- ऑनलाइन कक्षाएं, ई-बुक्स  
व्यवसाय- ऑनलाइन मार्केटप्लेस, मोबाइल बैंकिंग  
स्मार्ट फोन के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी (छ.ग.)



## जयशंकर जी की कविता (कामयाबी)

स्मार्ट फोन पर नोट्स बनाये जा सकते हैं जिन्हें आसानी से संग्रहित और संपादित किया जा सकता है नोट्स को कहीं भी ले जाया जा सकता है और जब भी खाली समय हो तो उनका अध्ययन किया जा सकता है स्मार्ट फोन पर ई-बुक्स और ऑडियो बुक्स भी उपलब्ध हैं जो सीखने को और अधिक लचीला बनाते हैं।

कामयाबी का राह पर चलना,  
मुश्किलों तो आएगी बार बार,  
लौकिक हार नहीं मानती है,  
सपने पूरे करने हे साकार।

मेहनत और लगन से ही मिलती है,  
जीवन में सफलता की चाबी,  
धैर्य और साहस से ही पर होती है  
जीवन की हर मुश्किल राही।

- सुशानु गुप्ता



वंदिका कौशिक  
बी.एस.-सी. द्वितीय सेमेस्टर

## प्रतियोगिता की होड़ में हम कैसे रहें

प्रस्तावना- प्रतियोगिता के युग में खुद को बनाए रखने के लिए, सबसे पहले हम अपने आप को जाने और अपनी क्षमताओं पर ध्यान रखें। दूसरों से तुलना करने के बजाय, हम अपनी मेहनत पर भरोसा रखें और हम अपने कमजोर पक्ष को मजबूत करने का प्रयास करें सफलता की राह पर चलने के लिए, हम अपने आप को प्रेरित रखें और कभी भी हार न मानें।

### स्वस्थ प्रतियोगिता के लक्षण

प्रदर्शन में सुधार- स्वस्थ प्रतियोगिता छात्रों को बेहतर प्रदर्शित करने के लिए प्रेरित कर करते हैं। वे अपनी सीमाओं से आगे निकलने और अधिक मेहनत करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

लक्ष्य निर्धारण- प्रतियोगिता छात्रों को लक्ष्य निर्धारित करने और उन्हें प्राप्त करने के लिये प्रेरित करती है।

### प्रतिक्रिया और सीखने-

प्रतियोगिता छात्रों को एक दूसरे से सीखने और अपने कमजोरियों को पहचान कर सुधार करने का अवसर प्रदान करती है।

### टीम वर्क:-

प्रतियोगिता टीम वर्क और सहयोग को बढ़ावा देती है क्योंकि छात्रों को एक साथ काम करने और एक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन किया जाता है।

प्रेरणा- प्रतियोगिता छात्रों को अपना सर्वश्रेष्ठ करने के लिए प्रेरित करती है जो हमारी पढ़ाई को बेहतर बनाने में मदद करती है।

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी (छ.ग.)

सीखने में वृद्धि- प्रतियोगिता छात्रों को समस्या समाधान टीम वर्क और नेतृत्व कौशल विकसित करने में मदद करती है।

आत्मविश्वास- प्रतियोगिता छात्रों को अपने आप पर विश्वास करने और नई चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

सामाजिक कौशल- प्रतियोगिता छात्रों को दूसरों के साथ काम करने संवाद करने और प्रतियोगिता करने की कला सीखने में मदद करती है।

तनाव और दबाव- प्रतियोगिता से छात्रों में तनाव और दबाव बढ़ जाता है खासकर यदि वे लगातार हार रहे हो या अपनी अपेक्षाओं को पूरा न कर पा रहे हों।

नकारात्मक तुलना- प्रतियोगिता से छात्रों में नकारात्मक तुलना हो सकती है जिससे वे खुद को दूसरों कमतर समझने लगते हैं।

अस्वास्थ्यकर प्रतियोगिता- यदि प्रतियोगिता अस्वास्थ्यकर हो तो यह हम छात्रों के लिए हानिकारक हो सकता है क्योंकि हम अपनी भावनाओं को नियंत्रण में नहीं रख पाते हैं और दूसरों को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करते हैं।

खराब स्व-भूल्यांकन- प्रतियोगिता के हम अपने आप को दूसरों के कारण कम आंक सकते हैं जो उनके आत्मविश्वास को प्रभावित करता है।

सीखने में बाधा- अत्यधिक प्रतियोगिता के कारण हम छान तनाव में आ सकते हैं और सीखने में ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई हो सकती है।

सकारात्मक संबंधों पर प्रभाव- अत्यधिक प्रतिस्पर्धा छात्रों के बीच प्रतिस्पर्धा और अविश्वास की भावना पैदा करती है जो उनके संबंधों को नुकसान पहुंचा सकती है

**प्रतिस्पर्धा के होड़ में आपने आय को कैसे रखें।**

खुद को जानें- हमें अपनी खूबियों और कमियों को पहचानना चाहिये। हम हर क्षेत्र में उत्कृष्ट नहीं हो सकते लेकिन अपनी क्षमताओं पर ध्यान कोन्द्रित कर सकते हैं

**लक्ष्य निर्धारित** - हमें अपने लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए और उन्हें प्राप्त करने के लिए मोहनत करना चाहिए, दूसरों के परिणामों से खुद को मापना बंद करना चाहिए।

**मेहनत पर ध्यान रखें** - जब हम अपनी तुलना दूसरों से करते हैं तो हम उनके परिणाम पर ध्यान देते हैं। ऐसा करने के बजाय हमें अपनी मेहनत पर भरोसा करना चाहिए और हद अपने कमजोर पक्ष को मजबूत करने में जुट जायेंगे।

**असफलता से सीखें**- असफलताओं को निराशा के रूप में नहीं बल्कि सीखने के अवसर के रूप में देखना चाहिए। असफलताओं से उबरने के लिए और अधिक मेहनत करना और बेहतर करने के लिए प्रयास करना चाहिए।

**सहयोग करें** - अपने आस-पास के सभी लोगों के साथ सहयोग करना। उनके लिए अच्छे विचार पैदा करना उत्साहवर्धक शब्दों का प्रयोग करना जो हम जानते हैं उसे साझा करना और सभी की परवाह करना।

**निष्कर्ष**- प्रतिस्पर्धा छात्रों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है लेकिन यह सुनिश्चित करना

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी (छ.ग.)

आवश्यक है कि प्रतिस्पर्धा का स्वस्थ हो और छात्रों के लिए नकारात्मक प्रभाव न डाले। माता - पिता और शिक्षक दोनों को छात्रों को स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का समर्थन करना चाहिए लेकिन उन्हें भी सुनिश्चित करना चाहिए कि छात्र तनाव चिंता और खराब स्व मूल्यांकन का अनुभव न करें।



### देवता बतकें आए गांधी

डॉ. श्रद्धा साहू  
बी.एस-सी, द्वितीय वर्ष

देवता बन के आए गांधी,  
देवता बनके आए।  
अड़बड़ अटपट काम करते हैं,  
घर-घर अलख जागाए। गांधी ...  
राम-कृष्ण औतार ला जानेन,  
रावन कंस ला मारिना  
हमर देस ला राक़स मन सो,  
लड़-लड़ दुनो उबारिना।  
चक्र सुरसस धनुस बानला,  
रहिन दुनो झन धारो।  
तय हर सोझे मुहुं मा काहिके,  
अंगरेजन ला टारो।  
सटका धर के पटकू पहिरे,  
चर्चित ला चमकाए।  
गांधी देवता बनके आए।।

डॉ.पी.विद्य की छत्तीसगढ़ की कविता से संकलित

## महान साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल की मिला ज्ञानपीठ पुरस्कार



शुशी पटवा  
भूतपूर्व छात्रा (एल्युमिनी)

छत्तीसगढ़ के माटीपुत्र विनोद कुमार शुक्ल साहित्यकार को भारत का साहित्य के क्षेत्र में सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है, यह हर्ष का विषय है। आपका जन्म 1 जनवरी 1937 को राजनांदगांव (छ.ग.) में हुआ। आपका "नौकर की कमीज" उपन्यास के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है। आप सहज, सरल एवं मृदुभाषी हैं। गहरी संवेदनशीलता और जादुई यथार्थवाद से मिलती जुलती शैली से आप जाने पहचाने जाते हैं। आपकी प्रमुख रचनाएं हैं - लगभग जय हिंद (1971), वह आरमी चला गया गगम कोट पहनकर (1981), सब कुछ होना बचा रहेगा (1992), अतिरिक्त नहीं (2000), कविता सुलंची कविता (2001), आकाश धरती की छटखटाता है (2006), पचास कवितार्ण (2011), कवि के बाद अभी (2012), दीवार में एक छिड़की रहती थी तथा खिलेगा तो देखेंगे (उपन्यास)।

यहां उल्लेख करना चाहेंगे कि "शहर से सोचता हूँ" आपकी एक कविता है, जो कि बी.ए., बी.एस-सी, बी.कॉम. तृतीय वर्ष के आधार पाठ्यक्रम हिन्दी भाषा में पढ़ाई जा रही है। इस कविता में आज के युग में पर्यावरण प्रभावित हो रहा है, जंगल की कटाई हो रही है, पेड़ काटकर उद्योग लगाये जा रहे हैं, इस पर विचार व्यक्त किया गया है। बड़े-बड़े पेड़ जो हमारे जीवन के साथी हैं जिससे हमें ऑक्सीजन मिलता है उसी से हम स्वस्थ रह सकते हैं, इस पर रचनाकार द्वारा चिंता व्यक्त किया गया है। हमारी संवेदना, हमारे सपने, हमारी स्मृतियां, हमारी खुशियां आज समाप्त होती जा रही हैं। यह कविता आज के आधुनिक युग में पर्यावरणीय संकट की ओर संकेत करती है साथ ही हमारी सोच को जड़ें आज सूख जा रही है। इसकी ओर भी चिंता व्यक्त की गई है।

**शिक्षा हवों वह पंख देती है, जो हवों ऊंचाईयो तक  
उड़ने की क्षमता देता है।**

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी (छ.ग.)

## छत्तीसगढ़िया कहावत



संजय दत्त बघेल  
प्रयोगशाला परिचारक

का हाथी हा नई होय हरहा रे संगी, राजा हा नई होय लबहरा।

दुनिया हावै अधारा रे संगी, काकर सो करब हम झगरा।

योयला सटक गोहे विखला म, आदर्श फसे हे अलकरहा।

नियाय नीति ला घुना खागे, धरम ला करीन कसरहा।

दुनिया हावै .....

दोया मां बहुत तेल भरे हे, बाती बने हे कचरा हा,

गुन करम घुरवा म फेकागे, देवता बने हे पथरा हा।

दुनिया हावै .....

गौलम अशोक गुरुवासी के नइये गुछारी, जैचंद्र बने हे मसलहा,

अंधेर नगर के चौपथ होते राजा,

टका सेर हे नेता टका सेर परजा हा।

दुनिया हावै.....

इंहा पेट भैरन पेटा रे संगी, मनखे मन हंगे हे हररहा।

इंहा के अगुवा नागर नई रंगे, बइला मन हंगे अबड़ कदरहा।

दुनिया हावै .....

गुन करम कब मुकुट बंधा है, योयला के कोनो नइये कदर करनहां

गाऊ के बारत म सब ठाकुरे ठाकुर, कोई नइये पदारी खिलनहा।

दुनिया हावै .....

बोसर्वी सरी बीत गे संगी, बहुत रहीव अजरहा,

एक्कइसर्वी सरी के महिना म संगी का छट जाहय मौसम बदरहा।

दुनिया हावै .....

कहत संजय सुनव सांगारी, झन बनिहौं कोनो बजरहा,

अबजस के झन गठ रा गांधी, पर जाना हे सब ला उज्जरहा।

दुनिया हावै .....

नवीन शासकीय महाविद्यालय, सकरी (छ.ग.)

## छत्तीसगढ़ वंदना



प्रदीप साहू  
सहायक ग्रेड-2

मोर छत्तीसगढ़िया राज तोला बन्दी बारंबार

समता सुमत के माला गुथौं मैहा,

एकता के पहिरावौं हार । मोर .....

हृदय स्थल म बसे धन के कटोरा दायी।

खनिज के भंडार भरे हे,

छत्तीसगढ़ी कोरा दायी।

तोरे छत्ती म बोहावै दायी,

महानदी के अमृत धारा मोर .....

तीरथ हंगे खेती किसानी,

अन्न उपजावत हाववा।

भिलाई म लोहा ढारे, बिजली बनाव थावच,

गांव-गांव म कोरवा ले

खिंचगोहे ताकत के तारा। मोर .....

दया मया बगाली, सब झन भाई-भाई होके,

भेद-भाव ला पाट देबो रे,

एकता के रापा कुवारी लेके,

हम सब हिल मिल के रहिबो,

भगा देबो दुनिया के सब अधियारा मोर .....

मोर छत्तीसगढ़िया राज तोला बन्दी बारंबार,

समता सुमत के माला गुथौं म हा

एकता के पहिरावौं हार । मोर .....

## महाविद्यालयीन गतिविधियां



# महाविद्यालयीन गतिविधियां

